4

रिमझिम

चौथी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

रिमझिम 4

चौथी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

0423

यह किताब ______________ की है।

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0423 – रिमझिम
कक्षा 4 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-666-7

प्रथम संस्करण
फरवरी 2007 माघ 1928

पुनर्मुद्रण
नवम्बर 2007 कार्तिक 1928
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
फरवरी 2014 माघ 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
मार्च 2017 फ़ाल्गुन 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941
जनवरी 2020 पौष 1942
जुलाई 2021 आषाढ़ 1943
नवंबर 2021 कार्तिक 1943
नवंबर 2022 कार्तिक 1944
मार्च 2024 चैत्र 1946

PD 300T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा लक्ष्मी प्रिंट इंडिया, 519/1/23, संसार कम्पाउंड, दिलशाद गार्डन इंडस्ट्रियल एरिया, शाहदरा, दिल्ली- 110 095 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *अमिताभ कुमार*
संपादक : *मरियम बारा*
सहायक उत्पादन अधिकारी : *ओम प्रकाश*

आवरण एवं सज्जा
जोएल गिल

चित्र
जोएल गिल, बरान इज़्लाल, श्रीविद्या नटराजन

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनायी गयी पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान

© NCERT not to be republished

किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 नवंबर 2006

© NCERT not to be republished

बड़ों से दो बातें

आपको याद होगा कि कक्षा तीन की पाठ्यपुस्तक ***रिमझिम-3*** में हमने निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की थी–

- पढ़ते समय बच्चे लिखी गई बात को अपने **पूर्वज्ञान** और पिछले अनुभव के साथ जोड़ते हुए पढ़ते हैं। इससे उन्हें पाठ को समझने में मदद मिलती है।
- अभ्यास प्रश्न केवल यह आँकने का मापदंड नहीं हैं कि बच्चों को पाठ कितना याद रहा। ***रिमझिम*** में दिए गए प्रश्न बच्चों को भावनात्मक रूप से पाठ से जुड़ने, बोलने, सोचने और कल्पना करने, तर्क एवं विश्लेषण करने, अवलोकन करने और **जीवन के विविध संदर्भों में भाषा का प्रयोग** करने के अवसर देते हैं।
- हर भाषा के पीछे कुछ नियम काम करते हैं जिनसे वह भाषा बनती है। अपने आसपास बोली जाने वाली **भाषा को सुनते-सुनते बच्चे उसके नियम सहज ही सीख लेते हैं।** स्कूल में भी यह **सहज प्रक्रिया** जारी रहनी चाहिए। इसी उद्देश्य से व्याकरण और भाषा संबंधी प्रश्न ***रिमझिम*** में पाठ की विषय सामग्री (जिसमें चित्र भी शामिल हैं) से जोड़े गए हैं।
- भाषा की **पुस्तक में चित्र** केवल पुस्तक को आकर्षक बनाने के लिए नहीं होते हैं; ये पाठ की समझ में विस्तार और गहराई लाने के साधन भी हैं। चित्रों को छोटे समूहों में बैठकर बारीकी से देखना और उन पर बातचीत करना बच्चों की **बौद्धिक क्षमता** का विकास करता है जिनमें **विश्लेषण और तर्क की क्षमता** जैसे ज़रूरी कौशल भी शामिल हैं।

  ऊपर कही गईं सभी बातें प्रारंभिक स्तर की सभी कक्षाओं के लिए समान रूप से प्रासंगिक हैं। इनके साथ-साथ कुछ और बातों की चर्चा भी हम यहाँ करना चाहेंगे।

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा यह सलाह देती है कि **कक्षा की गतिविधियों को बच्चों के रोज़मर्रा के अनुभवों से जोड़ा जाए** ताकि अध्यापन और परीक्षा पाठ्यपुस्तक केंद्रित बनकर न रह जाए। भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कक्षा के बाहर की दुनिया (जिसमें पास-पड़ोस, बाज़ार, बगीचा, संगी-साथी आदि सभी शामिल हैं) से भी उतनी ही प्रभावित होती है जितनी कक्षा के भीतर आयोजित होने वाली गतिविधियों से। भाषा की कक्षा में बच्चों के साथ मिलकर जो-जो गतिविधियाँ की जा सकती हैं उनका क्षेत्र बहुत व्यापक है। ***रिमझिम*** केवल सुझाव के तौर पर उसके कुछ नमूने और संकेत प्रस्तुत करती है। इन गतिविधियों में हिंदी में उपलब्ध बाल साहित्य लगातार शामिल किया जाना चाहिए। बच्चों की भाषा को विस्तार देने के लिए यह ज़रूरी है कि आप इस प्रकार की अन्य कहानियाँ और कविताएँ आदि पढ़ने के अनेक अवसर बच्चों को दें।
- अभ्यास प्रश्न करवाते समय बच्चों की भाषायी क्षमता को ध्यान में रखते हुए आपको कई निर्णय स्वयं लेने हैं। ***रिमझिम*** में **लिखित और मौखिक कार्य** संबंधी स्पष्ट निर्देश कुछ जगहों पर नहीं दिए गए हैं। वहाँ आप स्वयं यह तय करें कि वह गतिविधि मौखिक रूप से करवाई जानी है या लिखित रूप से। कई स्थानों पर प्रश्नों के साथ दिए गए चिह्नों (icons) से आप समझ जाएँगे कि वह अभ्यास कैसे करवाना है।

© NCERT not to be republished

- भाषा के संबंध में परीक्षा लेने की पारंपरिक प्रणाली अक्सर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों से मेल नहीं खाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के सिद्धांतों में रटने की प्रवृति को हतोत्साहित करने पर ज़ोर दिया गया है। रूपरेखा में यह बात स्पष्ट रूप से कही गई है कि **परीक्षा कक्षा की गतिविधियों से जुड़ी होनी चाहिए**। भाषा की परीक्षा में ऐसे प्रश्न पूछे जाने चाहिए जिनका उत्तर बच्चे अपनी समझ, सोच और कल्पना से दे सकें। प्रश्न-पत्र बनाते समय ***रिमझिम*** में दिए गए प्रश्नों को ध्यानपूर्वक देखकर इसी तरह के प्रश्न बनाएँ न कि आमतौर पर पूछे जाने वाले ऐसे रूढ़ प्रश्न जो कि पाठ में दी गई जानकारी दोहराने या उसे रटने की प्रवृति को बल देते हों।
- रटने की प्रवृति को बढ़ावा देने वाली एक अन्य परंपरा व्याकरण के नियमों को अलग से पढ़ाने की है। ***रिमझिम*** में हमारा प्रयास है कि **बच्चे व्याकरण की अवधारणाओं को विविध किस्म के पाठों के संदर्भ में पहचानना और उनका उचित प्रयोग करना** सीख सकें। संदर्भ से काटकर इन अवधारणाओं को देखना रटने की परंपरा को बढ़ावा देना होगा। अतः आप से अनुरोध है कि व्याकरण की अवधारणाओं की परिभाषा लिखवाने और उन्हें याद करवाने से बचें। इस बात की चर्चा ***शिक्षक संदर्शिका,*** *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम* में विस्तार से की गई है।
- भाषा शिक्षण का उद्देश्य भाषा की समझ और अभिव्यक्ति का विकास करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ऐसा आत्मीय परिवेश ज़रूरी है जिसमें हर **बच्चा अपनी सोच और भावनाओं को बगैर डर और संकोच के व्यक्त कर सके**। इसके लिए नीचे दिए गए तीन बिंदुओं पर आपका संवेदनशील होना ज़रूरी है–

– बच्चों की **सीखने की गति** समान नहीं होती। सीखने में बच्चों का उत्साह पैदा करने और उसे बनाए रखने के लिए ज़रूरी है कि उन्हें अपनी गति से सीखने की छूट मिले। अतः आपको कई अवसरों पर धैर्य रखना होगा।

– बच्चे का परिवेश उसकी भाषा को गढ़ता है। इसलिए बच्चे के उच्चारण और शब्दावली पर परिवेश का प्रभाव होना स्वाभाविक है। यह बहुत ज़रूरी है कि हम **बच्चे के घर की भाषा और संस्कृति** को सहज रूप से स्वीकार करें ताकि बच्चे में सीखने का आत्मविश्वास और उत्साह पैदा हो सके। ***रिमझिम*** में भाषा के कई ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में दिए गए सुझाव के अनुरूप **बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल** करते हैं। बहुभाषिकता हमारे देश की एक सांस्कृतिक विशेषता है जो किसी न किसी रूप में हर कक्षा में देखी जा सकती है। विभिन्न शोधों आदि के माध्यम से यह बात पूरे विश्व में सिद्ध हो चुकी है कि कक्षा में मौजूद भाषायी विविधता सोचने, समझने और व्यक्त करने के तरीकों का विस्तार करती है।

– किसी भी भाषा की समृद्धि तथा जीवंतता की पहचान उसके विभिन्न रूपों, शब्दों तथा शैली की विविधता से होती है। रिमझिम की रचनाओं में आपको हिंदी के विभिन्न रूपों की झलक मिलेगी। कुछ ऐसे शब्द मिलेंगे जिनका अर्थ हमारे देश के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग है। जैसे-सीताफल को कहीं शरीफा कहा जाता है तो कहीं कद्दू को सीताफल कहते हैं। बच्चों से इस बारे में चर्चा करें। चर्चा के दौरान बहुत से शब्द निकल कर आएँगे।

– बच्चों के उत्तरों और उनमें निहित सोच एवं कल्पना को स्वीकार करना ज़रूरी है। शुरू से ही बच्चों की त्रुटियाँ निकालना, उनकी आलोचना करना और उन्हें दंडित करना शिक्षा के बुनियादी उद्देश्यों को खंडित और ध्वस्त कर देना है। प्रारंभिक स्तर में की गई **त्रुटियाँ बच्चों की सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक और अस्थायी चरण होती हैं**। त्रुटियों से आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि बच्चे कितना सीख पाए हैं। त्रुटियों को सुधारने से पहले उनका विश्लेषण करना ज़रूरी है जिससे यह तय हो सके कि उन पर कब और कैसे ध्यान दिया जाना उपयोगी होगा। बच्चों की भाषा की कई आँचलिक रंगतें अक्सर त्रुटियाँ समझ ली जाती हैं। उन्हीं त्रुटियों पर ध्यान दें जो बातचीत तथा समझ में बाधा बन रही हों। साथ ही यह भी तय करना ज़रूरी है कि किस त्रुटि पर कब ध्यान दिया जाए जिससे बच्चों को स्वयं उस त्रुटि को अपनी समझ और कोशिश से दूर कर पाने का अवसर मिल सके। जहाँ तक परीक्षा की बात है, परीक्षा में त्रुटियों पर ध्यान देने के बदले बच्चे द्वारा कही गई बात को ध्यान में रखना अधिक उपयोगी रहेगा। मूल्यांकन के बारे में भी शिक्षक संदर्शिका में विस्तार से चर्चा की गई है।

- ***रिमझिम 3*** की ही तरह ***रिमझिम 4*** में भी कई पाठ सिर्फ़ पढ़ने के लिए दिए गए हैं उनके साथ कोई प्रश्न नहीं है। इन पाठों को देने का उद्देश्य बच्चों को **पढ़ने की अतिरिक्त सामग्री** उपलब्ध कराना है जिसे वे प्रश्नों के बोझ से मुक्त होकर आनंद लेते हुए पढ़ सकें। बच्चों को पढ़ने के जितने अधिक अवसर मिलेंगे, उतना ही अधिक उनकी पढ़ने की गति एवं शब्द–भंडार बढ़ेगा तथा वर्तनी संबंधी त्रुटियों में कमी आएगी।
- ***नसीरुद्दीन का निशाना*** पाठ चौथी की अंग्रेज़ी पाठ्यपुस्तक में भी दिया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है कि एक पाठ्यपुस्तक की झलक दूसरी पाठ्यपुस्तक में दिखना बच्चों के लिए रोचक तो होगा ही इसके साथ ही अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक में इस पाठ को समझने में भी बच्चों को मदद मिलेगी। अत: आपसे हमारा अनुरोध है कि पाठ ऐसे पढ़ाया जाए कि हिंदी की कक्षा में पढ़ने के दौरान ही बच्चे अंग्रेज़ी की कक्षा में इस पाठ को पढ़ें। बच्चों द्वारा तीसरी कक्षा की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक *आसपास* में पढ़े गए पाठ से एक अभ्यास को जोड़ा गया है। इस प्रकार ***रिमझिम 4*** का **अन्य विषयों के साथ संबंध** जोड़ने का प्रयास किया गया है।
- पाठ्यपुस्तक निर्माण एक सतत् प्रक्रिया है। जिसमें रचनात्मक सुधारों की गुजाइंश सदैव बनी रहती है। इस किताब के विकास में ***रिमझिम 1 और 3*** के संबंध में **प्राप्त शिक्षक के सुझावों और प्रश्नों को ध्यान में रखा गया है**। इसी क्रम में कठिन शब्दों के अर्थ भी कहीं–कहीं दिए गए हैं।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सभी मूल्यों की जड़ में सामाजिक सद्भाव एवं शांति को चिह्नित करती है और इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक विषय को महत्त्व देती है। शांतिपरक मूल्यों के विकास में भाषा की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। भाषा किसी भी संस्कृति में मूल्यों को बनाए रखने का काम करती है। दूसरों के प्रति खासकर **असमानता, क्षमता** या **पृष्ठभूमि के अंतर के संदर्भ में बच्चों को संवेदनशील** बनाना भी भाषा–शिक्षण के दौरान होना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पुस्तक में *सुनीता की पहिया कुर्सी* पाठ दिया गया है। इसी तरह की अन्य सामग्री पत्र–पत्रिकाओं से या स्वयं विकसित करके शिक्षक उनका उपयोग कर सकते हैं। शिक्षक को चाहिए कि मूल्यों के विकास में भाषा की भूमिका सुनिश्चित करते हुए कक्षा में अपने और बच्चों के व्यवहार में उसकी परिणति लाए।

© NCERT not to be republished

आभार

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम प्रोफ़ेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हर संभव सहयोग दिया।

परिषद् उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली; प्रकाशक, मनोज पब्लिकेशंस, जयपुर; साहित्य अकादमी, दिल्ली; प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नयी दिल्ली; एकलव्य, भोपाल; प्रथम संस्था, नयी दिल्ली; तूलिका प्रकाशन, चैन्नई के हम आभारी हैं।

निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, नयी दिल्ली एवं अध्यक्ष, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नयी दिल्ली के प्रति भी सहयोग के लिए हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। जिन्होंने अपनी संस्था के पुस्तकालय के उपयोग की हमें सहर्ष अनुमति दी।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए शाकम्बर दत्त, *इंचार्ज,* कंप्यूटर कक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; विजय कौशल, उत्तम कुमार, सीमा मेहमी, ममता, पूजा शर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; रेखा सिन्हा, *आरती बलूनी, प्रूफ़ रीडर*; राधा, *कॉपी एडीटर*; सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*; प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य सलाहकार

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्रवक्ता,* मिरांडा हाउस, नयी दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक*, नगर निगम प्राथमिक सहशिक्षा विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली

उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

कृष्ण कुमार, *निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मंजुला माथुर, *प्रोफ़ेसर,* सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मालविका राय, *शिक्षिका*, हैरीटेज़ स्कूल, डी–II, वसंत कुंज, नयी दिल्ली

रमेश कुमार, *प्रवक्ता,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्रवक्ता,* जिला मंडलीय शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली

सोनिका कौशिक, *प्रवक्ता,* जीसस एंड मेरी कॉलेज, नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

लता पाण्डे, *प्रवाचक*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

किताब में आए चिह्न

तुम्हें किताब में जगह-जगह ये चिह्न दिखाई देंगे। इनका मतलब यहाँ दिया गया है।

लिखो

खेल

बातचीत के लिए

खोजो

बनाओ

सिर्फ़ पढ़ने के लिए

तुम्हारी कल्पना से

© NCERT not to be republished

कहाँ क्या है

आमुख — iii

बड़ों से दो बातें — v

1 मन के भोले-भाले बादल — 1

2 जैसा सवाल वैसा जवाब — 6

3 किरमिच की गेंद — 11

कोई लाके मुझे दे — 21

4 पापा जब बच्चे थे — 22

उलझन — 32

एक साथ तीन सुख — 33

5 दोस्त की पोशाक — 35

नसीरूद्दीन का निशाना — 42

6 नाव बनाओ नाव बनाओ — 44

7 दान का हिसाब — 51

© NCERT not to be republished

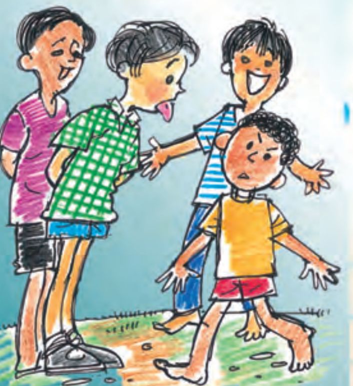

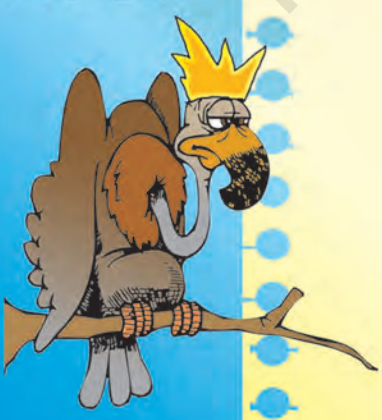

8	कौन?	62
9	स्वतंत्रता की ओर	66
10	थप्प रोटी थप्प दाल	80
11	पढ़क्कू की सूझ	92
12	सुनीता की पहिया कुर्सी	97
13	हुदहुद	106
14	मुफ़्त ही मुफ़्त	114
	बजाओ खुद का बनाया बाजा	126
	आँधी	128

© NCERT not to be republished

1 मन के भोले-भाले बादल

0423CH01

झब्बर-झब्बर बालों वाले
गुब्बारे से गालों वाले
लगे दौड़ने आसमान में
झूम-झूम कर काले बादल।

कुछ जोकर-से तोंद फुलाए
कुछ हाथी-से सूँड़ उठाए
कुछ ऊँटों-से कूबड़ वाले
कुछ परियों-से पंख लगाए

आपस में टकराते रह-रह
शेरों से मतवाले बादल।

कुछ तो लगते हैं तूफ़ानी
कुछ रह-रह करते शैतानी
कुछ अपने थैलों से चुपके
झर-झर-झर बरसाते पानी

नहीं किसी की सुनते कुछ भी
ढोलक-ढोल बजाते बादल।

© NCERT not to be republished

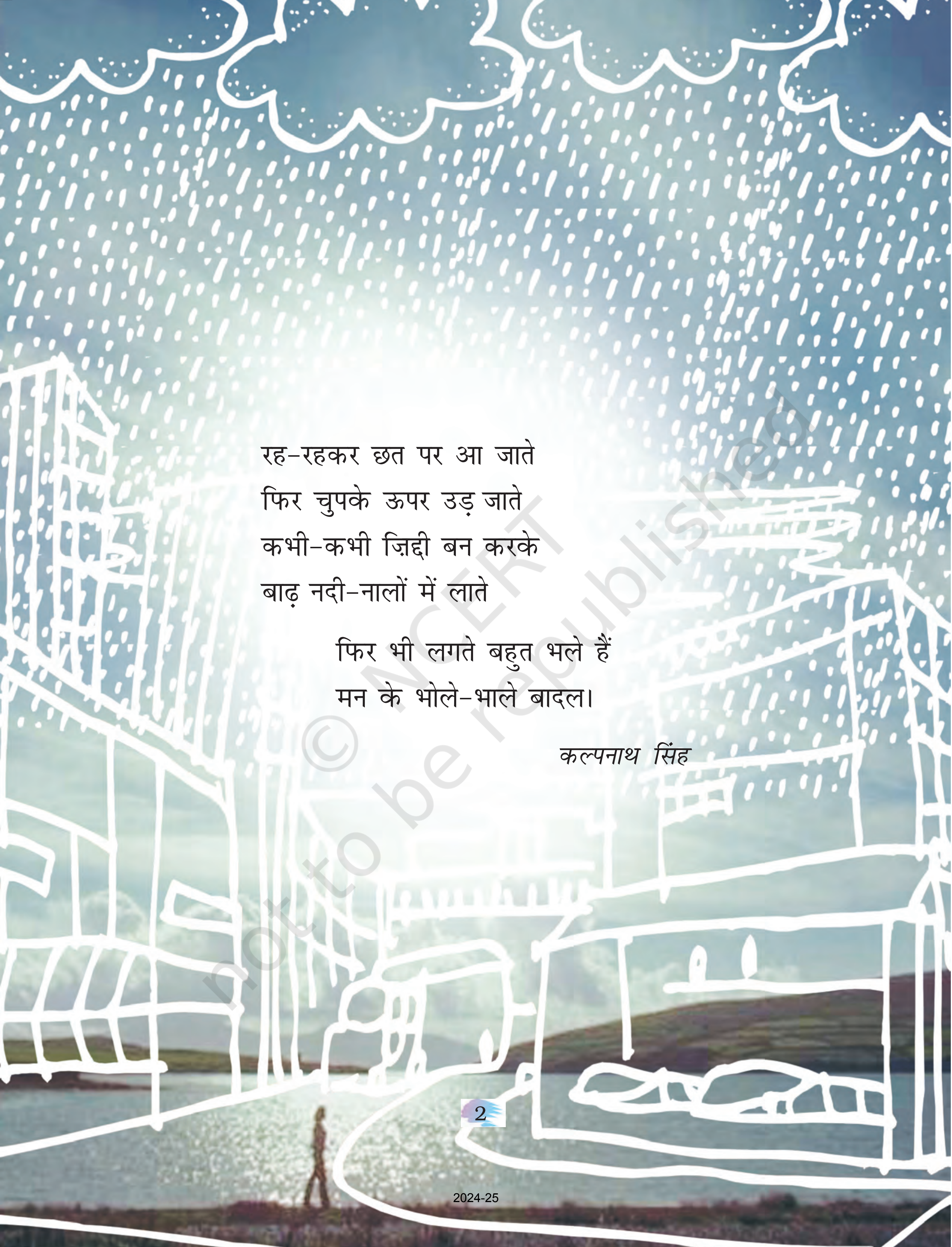

रह-रहकर छत पर आ जाते
फिर चुपके ऊपर उड़ जाते
कभी-कभी ज़िद्दी बन करके
बाढ़ नदी-नालों में लाते

फिर भी लगते बहुत भले हैं
मन के भोले-भाले बादल।

कल्पनाथ सिंह

© NCERT not to be republished

तुम्हारी समझ से

कभी कभी ज़िद्दी बन करके
बाढ़ नदी-नालों में लाते

(क) बादल नदी-नालों में बाढ़ कैसे लाते होंगे?

नहीं किसी की सुनते कुछ भी
ढोलक-ढोल बजाते बादल

(ख) बादल ढोल कैसे बजाते होंगे?

कुछ तो लगते हैं तूफ़ानी
कुछ रह-रह करते शैतानी

(ग) बादल कैसी शैतानियाँ करते होंगे?

कैसा-कौन

	कैसा	कौन
सूरज-सी	चमकीली	थाली
चंदा -सा	....	....
हाथी-सा	....	....
जोकर-सा	....	....
परियों-सा	....	....
गुब्बारे-सा	....	....
ढोलक-सा	....	....

© NCERT not to be republished

कविता से आगे

(क) तूफ़ान क्या होता है? बादलों को तूफ़ानी क्यों कहा गया है?

(ख) साल के किन-किन महीनों में ज़्यादा बादल छाते हैं?

(ग) कविता में 'काले' बादलों की बात की गई है। क्या बादल सचमुच काले होते हैं?

(घ) कक्षा में बातचीत करो और बताओ कि बादल किन-किन रंगों के होते हैं।

कैसे-कैसे बादल

(क) तरह-तरह के बादलों के चित्र बनाओ।

काले-काले डरावने

गुब्बारे-से गालों वाले

हल्के-फुल्के सुहाने

© NCERT not to be republished

(ख) कविता में बादलों को 'भोला' कहा गया है। इसके अलावा बादलों के लिए और कौन-कौन से शब्दों का इस्तेमाल किया गया है? नीचे लिखे अधूरे शब्दों को पूरा करो।

म .... ज़ि ....

शै .... तू ....

बारिश की आवाज़ें

कुछ अपने थैलों से चुपके
झर-झर-झर बरसाते पानी

पानी के बरसने की आवाज़ है झर-झर-झर!
पानी बरसने की कुछ और आवाज़ें लिखो।

....

....

....

कैसे-कैसे पेड़

बादलों की तरह पेड़ भी अलग-अलग आकार के होते हैं। कोई बरगद-सा फैला हुआ और कोई नारियल के पेड़ जैसा ऊँचा और सीधा।

अपने आसपास अलग-अलग तरह के पेड़ देखो। तुम्हें उनमें कौन-कौन से आकार दिखाई देते हैं? सब मिलकर पेड़ों पर एक कविता भी तैयार करो।

© NCERT not to be republished

0423CH02

2 जैसा सवाल वैसा जवाब

बादशाह अकबर अपने मंत्री बीरबल को बहुत पसंद करता था। बीरबल की बुद्धि के आगे बड़े-बड़ों की भी कुछ नहीं चल पाती थी। इसी कारण कुछ दरबारी बीरबल से जलते थे। वे बीरबल को मुसीबत में फँसाने के तरीके सोचते रहते थे।

अकबर के एक खास दरबारी ख्वाजा सरा को अपनी विद्या और बुद्धि पर बहुत अभिमान था। बीरबल को तो वे अपने सामने निरा बालक और मूर्ख समझते थे। लेकिन अपने ही मानने से तो कुछ होता नहीं! दरबार में बीरबल की ही तूती बोलती और ख्वाजा साहब की बात ऐसी लगती थी जैसे नक्कारखाने में तूती की आवाज़। ख्वाजा साहब की चलती तो वे बीरबल को हिंदुस्तान से निकलवा देते लेकिन निकलवाते कैसे!

एक दिन ख्वाजा ने बीरबल को मूर्ख साबित करने के लिए बहुत सोच-विचार कर कुछ मुश्किल प्रश्न सोच लिए। उन्हें विश्वास था कि बादशाह के उन प्रश्नों को सुनकर बीरबल के छक्के छूट जाएँगे और वह लाख कोशिश करके भी संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाएगा। फिर बादशाह मान लेगा कि ख्वाजा सरा के आगे बीरबल कुछ नहीं है।

© NCERT not to be republished

ख्वाजा साहब अचकन-पगड़ी पहनकर दाढ़ी सहलाते हुए अकबर के पास पहुँचे और सिर झुकाकर बोले, "बीरबल बड़ा बुद्धिमान बनता है। आप भी उसकी लंबी-चौड़ी बातों के धोखे में आ जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे तीन सवालों के जवाब पूछकर उसके दिमाग की गहराई नाप लें। उस नकली अक्ल-बहादुर की कलई खुल जाएगी।"

ख्वाजा के अनुरोध करने पर अकबर ने बीरबल को बुलाया और उनसे कहा, "बीरबल! परम ज्ञानी ख्वाजा साहब तुमसे तीन प्रश्न पूछना चाहते हैं। क्या तुम उनके उत्तर दे सकोगे?"

बीरबल बोले, "जहाँपनाह! ज़रूर दूँगा। खुशी से पूछें।"

ख्वाजा साहब ने अपने तीनों सवाल लिखकर बादशाह को दे दिए।

अकबर ने बीरबल से ख्वाजा का पहला प्रश्न पूछा, "संसार का केंद्र कहाँ है?"

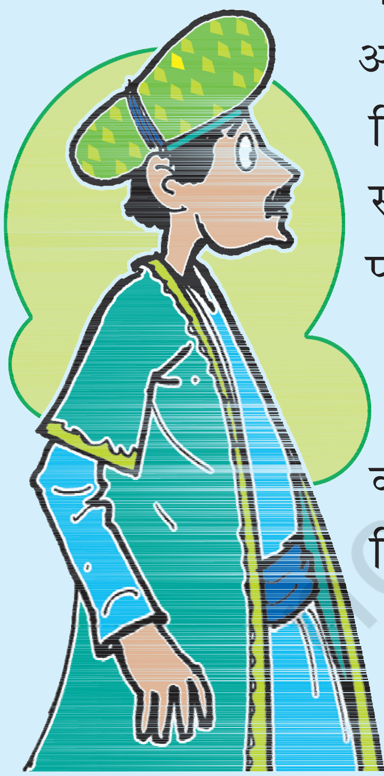

बीरबल ने तुरंत ज़मीन पर अपनी छड़ी गाड़कर उत्तर दिया, "यही स्थान चारों ओर से दुनिया के बीचों-बीच पड़ता है। यदि ख्वाजा साहब को विश्वास न हो तो वे फ़ीते से सारी दुनिया को नापकर दिखा दें कि मेरी बात गलत है।"

अकबर ने दूसरा प्रश्न किया, "आकाश में कितने तारे हैं?"

© NCERT not to be republished

बीरबल ने एक भेड़ मँगवाकर कहा, "इस भेड़ के शरीर में जितने बाल हैं, उतने ही तारे आसमान में हैं। ख्वाजा साहब को इसमें संदेह हो तो वे बालों को गिनकर तारों की संख्या से तुलना कर लें।"

अब अकबर ने तीसरा सवाल किया, "संसार की आबादी कितनी है?"

बीरबल ने कहा, "जहाँपनाह! संसार की आबादी पल-पल पर घटती-बढ़ती रहती है क्योंकि हर पल लोगों का मरना-जीना लगा ही रहता है। इसलिए यदि सभी लोगों को एक जगह इकट्ठा किया जाए तभी उनको गिनकर ठीक-ठीक संख्या बताई जा सकती है।"

बादशाह तो बीरबल के उत्तरों से संतुष्ट हो गया लेकिन ख्वाजा साहब नाक-भौंह सिकोड़कर बोले, "ऐसे गोलमोल जवाबों से काम नहीं चलेगा जनाब!"

बीरबल बोले, "ऐसे सवालों के ऐसे ही जवाब होते हैं। पहले मेरे जवाबों को गलत साबित कीजिए, तब आगे बढ़िए।"

ख्वाजा साहब से फिर कुछ बोलते नहीं बना।

© NCERT not to be republished

तुम्हारी बात

(क) ख्वाजा सरा के तीनों सवालों का क्या कोई और जवाब हो सकता है? अपने मन से सोचकर लिखो।

(ख) अगर तुम ख्वाजा सरा की जगह पर होते तो बीरबल को हराने के लिए कौन-से सवाल पूछते?

(ग) ख्वाजा सरा का बस चलता तो वे बीरबल को हिंदुस्तान से निकाल देते। अगर तुम्हारा बस चले तो तुम कौन-कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहोगे?

बस

नीचे लिखे वाक्य पढ़ो–

- मैं **बस** में बैठकर स्कूल जाती हूँ।
- ख्वाजा सरा का **बस** चलता तो वे बीरबल को निकाल देते।
- **बस!** अब रुक जाओ।
- **बस** दो दिन की तो बात है। मैं आ जाऊँगी।

ऊपर लिखे वाक्यों में **बस** शब्द के अर्थ अलग-अलग हैं।
अब इसी तरह **चल** शब्द से वाक्य बनाओ।
*(**संकेत** चल, चल-चल, चला, चलें, चलना, चलती, चलो)*

बढ़े कहानी

एक दिन अकबर ने बीरबल से पूछा, "बीरबल, दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन है?"
बीरबल ने क्या कहा होगा? कहानी आगे बढ़ाओ।

© NCERT not to be republished

खोजो कहानियाँ

बीरबल की चतुराई के किस्से बहुत मशहूर हैं।

(क) तुम भी बीरबल का एक ऐसा ही किस्सा ढूँढ़ो जिसमें वह अपने जवाबों से सबका मुँह बंद कर देता है।

(ख) बीरबल की तरह बहुत से अन्य व्यक्तियों की हाज़िरजवाबी के किस्से प्रसिद्ध हैं। उनके नाम पता करो।

एक और शब्द

नीचे लिखे शब्दों की जगह और कौन-सा शब्द इस्तेमाल हो सकता है? खाली जगह में लिखो।

बुद्धिमान	....	मूर्ख	....
अभिमान	....	विश्वास	....
संसार	....	कोशिश	....

मुहावरे

नीचे लिखे मुहावरों का इस्तेमाल तुम कब-कब कर सकते हो? आपस में चर्चा करो। अब इनका वाक्यों में इस्तेमाल करो।

- नाक-भौंह सिकोड़ना
- कलई खुलना

© NCERT not to be republished

3 किरमिच की गेंद

0423CH03

गर्मी की छुट्टियाँ थीं। दोपहर के समय दिनेश घर में बैठा कोई कहानी पढ़ रहा था। तभी पेड़ के पत्तों को हिलाती हुई कोई वस्तु धम से घर के पीछे वाले बगीचे में गिरी। दिनेश आवाज़ से पहचान गया कि वह वस्तु क्या हो सकती है। वह एकदम से उठकर बरामदे की चिक सरका कर बगीचे की ओर भागा।

"अरे अरे, बेटा कहाँ जा रहा है? बाहर लू चल रही है।" दिनेश की माँ मशीन चलाते-चलाते एकदम ज़ोर से बोलीं। परंतु दिनेश रुका नहीं। उसने पैरों में चप्पल भी नहीं पहनी। जून का महीना था। धरती तवे की तरह तप रही थी। पर दिनेश को पैरों के जलने की भी चिंता नहीं थी। वह जहाँ से आवाज़ आई थी, उसी ओर भाग चला।

सामने की क्यारी में भिंडियों के ऊँचे-ऊँचे पौधे थे। एक ओर सीताफल की घनी बेल फैली हुई थी। क्यारियों के चारों ओर हरे-हरे केले के वृक्ष लहरा रहे थे। दिनेश ने जल्दी-जल्दी भिंडियों के पौधों को उलटना-पलटना आरंभ किया। जब वहाँ कुछ नहीं मिला तो उसने सारी सीताफल की बेल छान मारी।

बराबर में ही घूँस ने गड्ढे बना रखे थे। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते जब उसकी निगाह उधर गई तो उसने देखा कि गड्ढे के ऊपर ही एक बिल्कुल नई चमचमाती किरमिच की गेंद पड़ी है।

दिनेश ने हाथ बढ़ाकर गेंद उठा ली। लगता था जैसे किसी ने उसे आज ही बाज़ार से खरीदा है। उसने उसे

© NCERT not to be republished

उलट-पलटकर देखा परंतु कुछ भी समझ में नहीं आया। नज़र उठाकर उसने पास की तिमंज़िली इमारत की ओर देखा कि हो सकता है किसी बच्चे ने इसे ऊपर से फेंका हो परंतु उस इमारत के इस ओर खुलने वाले सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद थे। छत की मुँडेर से लेकर नीचे तक तेज़ धूप चिलचिला रही थी।

फिर कौन खरीद सकता है नई गेंद? दिनेश ने सुधीर, अनिल, अरविंद, आनंद, दीपक-सभी के नाम मन में दोहराए। यदि गेंद खरीदी भी है तो इस दोपहरी में इसे नीचे कौन फेंकेगा!

हो न हो, यह गेंद बाहर से ही आई है। उसने सड़क पर बने गोल चक्कर के बगीचे की ओर देखा परंतु वहाँ पर केवल दो-चार गायें ही दिखाई पड़ीं जो पेड़ों के नीचे सुस्ता रही थीं। उसे ध्यान आया कि जाने कितनी बार अपने मोहल्ले के बच्चों की गेंदें क्रिकेट खेलते हुए दूर चली गईं और फिर कभी नहीं मिलीं। एक बार तो एक गेंद एक चलते हुए ट्रक में भी जा पड़ी थी।

तभी भीतर से माँ की आवाज़ आई, "अरे दिनेश, तू सुनेगा नहीं? सब अपने-अपने घरों में सो रहे हैं और तू धूप में घूम रहा है।"

दिनेश गेंद को हाथ में लिए हुए भीतर आ गया। ठंडे फर्श पर बिछी चटाई पर वह लेट गया और सोचने लगा-भले ही यह गेंद मोहल्ले में से किसी की न हो, परंतु ईमानदारी इसी में है कि एक बार सबसे पूछ लिया जाए।

गर्मी की छुट्टियाँ थीं। बच्चों ने खेलने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एक क्लब बनाया हुआ था। उस क्लब में सभी बच्चों के लिए बल्ले थे और गेंद खरीदने के लिए वे आपस में क्लब का चंदा देकर पैसे इकट्ठा कर लेते थे।

शाम को सारे बच्चे इकट्ठा हुए। दिनेश ने सभी से पूछा, "मुझे एक गेंद मिली है। अगर तुममें से किसी की गेंद खो गई हो, तो वह गेंद की पहचान बताकर गेंद मुझसे ले सकता है।"

© NCERT not to be republished

तभी अनिल बोला, "गेंद तो मेरी खो गई है।"

"कब खोई थी तेरी गेंद?"

"यही कोई चार महीने पहले।"

"तो वह गेंद तेरी नहीं है", दिनेश ने कहा।

"फिर वह मेरी होगी", सुधीर ने तुरंत उस पर अपना अधिकार जताते हुए कहा।

"वह कैसे", दिनेश ने पूछा।

"तू मुझे गेंद दिखा दे, मैं अपनी निशानी बता दूँगा।"

"वाह! यह कैसे हो सकता है?" दिनेश बोला, "गेंद देखकर निशानी बताना कौन-सा कठिन है! बिना देखे बता, तब जानूँ।"

तभी ऊपर से दीपक उतर आया। दीपक अपना मतलब सिद्ध करने तथा अवसर पड़ने पर सभी को मित्र बना लेने में चतुर था। गेंद की बात सुनकर दीपक बोला, "गेंद मेरी है।"

"कैसे तेरी है?" सभी ने एक साथ पूछा, "कल ही तो तू कह रहा था कि इस बार तेरे पापा तुझे गेंद लाने के लिए पैसे नहीं दे रहे हैं।"

"मेरी गेंद तो पाँच महीने पहले खोई थी", दीपक ने कहा, "जब बड़े भैया की शादी हुई थी न, तभी सुनील ने मेरी गेंद छत पर से नीचे फेंक दी थी।"

दिनेश अच्छी तरह जानता था कि यह गेंद दीपक की नहीं है। दीपक की गेंद पाँच महीने पहले खोई थी। और यह कभी हो ही नहीं सकता कि गेंद पाँच-छह महीने पड़ी रहे और उस पर मिट्टी का एक भी दाग न लगे।

दीपक ने कहा, "मैं कुछ नहीं जानता। गेंद मेरी है। वह मेरी है और सिर्फ़ मेरी है।"

© NCERT not to be republished

“अरे, जा जा, बड़ा आया गेंदवाला! क्या सबूत है कि यही गेंद नीचे फेंकी थी”, अनिल ने पूछा।

दीपक ने कहा, “हाँ, सबूत है। मुझे गेंद दिखा दो, मैं फ़ौरन बता दूँगा।”

दिनेश ने देखा कि झगड़ा बढ़ रहा है। गेंद हथियाने के लिए दीपक सुधीर और सुनील का सहारा ले रहा है।

वह जानता था कि यदि गेंद दीपक के पास चली गई तो ये तीनों मिलकर खेलेंगे।

“अच्छा मैं गेंद ला रहा हूँ। परंतु जब तक पक्का सबूत नहीं मिलेगा, मैं किसी को दूँगा नहीं”, दिनेश ने कहा।

गेंद आ गई। दीपक उसे देखते ही बोला, "यह मेरी है, यही है मेरी गेंद। यह लाल रंग का निशान मेरी ही गेंद पर था।"

"वाह! सभी गेंदों पर ऐसे ही निशान होते हैं", अनिल ने दिनेश का साथ देते हुए कहा।

दीपक ने फिर ज़ोर लगाया, "मैं अपने पापा से कहलवा सकता हूँ कि गेंद मेरी है।"

"अरे जा, ऐसे तो मैं अपने बड़े भाई से कहलवा सकता हूँ कि गेंद दिनेश की है!" अनिल ने कहा।

"कुछ भी हो गेंद मेरी है", दीपक ने उसे धरती पर मारते हुए कहा "धरती पर टप्पा पड़ते हुए मेरी गेंद में से ऐसी ही आवाज़ आती थी।"

"मेरे साथ बाज़ार चल। दुकानों पर जितनी गेंदें हैं, सभी के टप्पे की आवाज़ ऐसी ही होगी", अनिल ने फिर उसकी बात काट दी।

"अच्छी बात है, तो मैं इसे सड़क पर फेंक दूँगा। देखूँ कैसे कोई खेलेगा!" दीपक ने जैसे ही गेंद को सड़क पर फेंकने के लिए हाथ उठाया कि अनिल और दिनेश ने उसे पकड़ लिया। अब दीपक ने रुआँसे होते हुए अपना अंतिम हथियार आज़माया। बोला, "या तो गेंद मुझे दे दो, नहीं तो मैं इसके पैसे सुनील से लूँगा।"

अब तो सुनील, दीपक और सुधीर का गुट मज़बूत होने लगा था। तीनों का ही कहना था कि गेंद दीपक की है और उसे ही मिलनी चाहिए।

दिनेश तब तक चुप था। वास्तव में दिनेश का मन उस समय सबके साथ मिलकर उस गेंद से खेलने को कर रहा था। बोला, "अब चुप भी रहो झगड़ा बाद में कर लेंगे। अपने-अपने बल्ले ले आओ, पहले खेल लें।"

© NCERT not to be republished

पाँच मिनट के भीतर ही खेल आरंभ हो गया। दिनेश बल्लेबाजी कर रहा था। अभी दो-चार बार ही खेला था कि वह चमकदार नई गेंद एकदम ज़ोर से उछली और दरवाज़ा पार कर सड़क पर जाते हुए एक स्कूटर में बनी सामान रखने की जालीदार टोकरी में जा गिरी। स्कूटर वाले को शायद पता भी नहीं चला। तेज़ी से चलते हुए स्कूटर के साथ गेंद भी चली गई।

बच्चे पहले तो चिल्लाते हुए स्कूटर के पीछे भागे, परंतु जल्दी ही सब रुक गए। वे समझ गए थे कि स्कूटर के पीछे भागना बेकार है। एक पल के लिए सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर सभी ठहाका मार कर हँस पड़े।

शांताकुमारी जैन

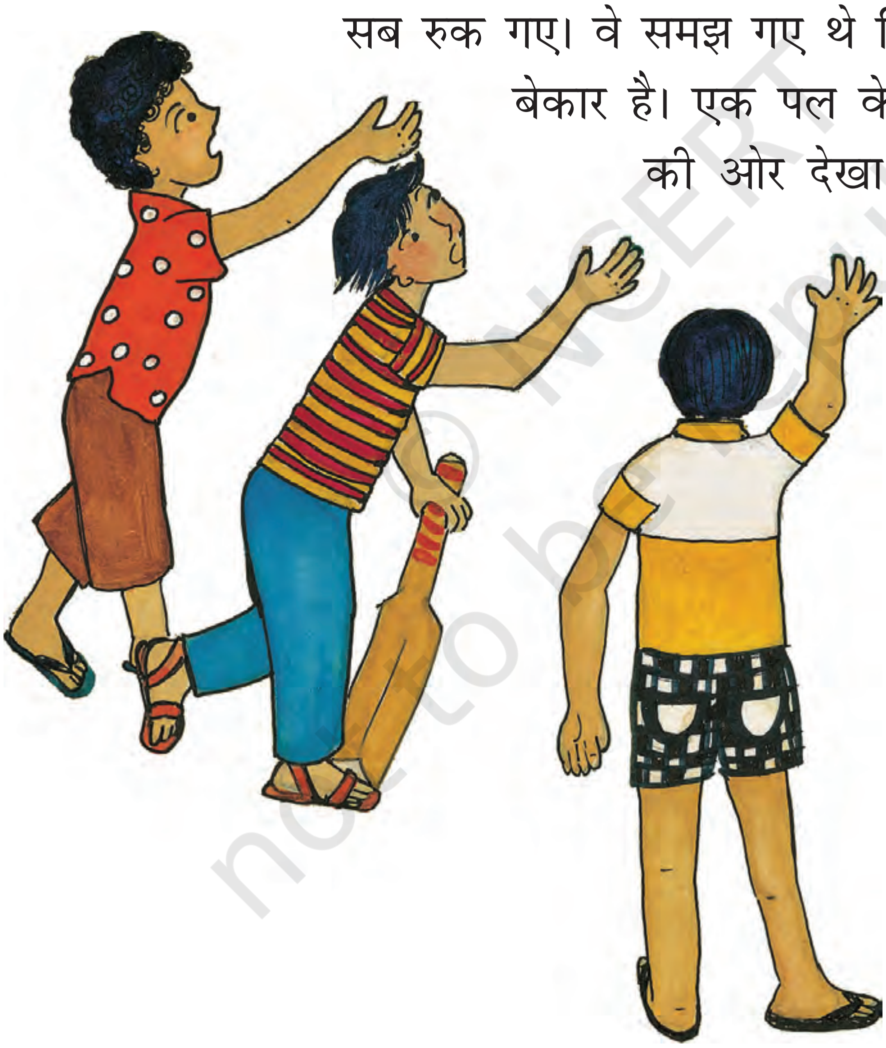

© NCERT not to be republished

कहानी की बात

(क) *दिनेश की माँ मशीन चलाते-चलाते बोलीं, "बेटा, कहाँ जा रहे हो?"*

- दिनेश की माँ कौन-सी मशीन चला रही होंगी?
- तुमने इस मशीन को कहाँ-कहाँ देखा है?

(ख) *दिनेश ने सारी सीताफल की बेल छान मारी।*

- दिनेश क्या खोज रहा था?
- दिनेश को कैसे पता चला होगा कि क्यारी में वही चीज़ गिरी है?

(ग) *दिनेश अच्छी तरह जानता था कि गेंद दीपक की नहीं है।*

- दिनेश को यह बात कैसे पता चली कि गेंद दीपक की हो ही नहीं सकती?
- दीपक बार-बार गेंद को अपनी क्यों बता रहा होगा?

गेंद किसकी

(क) दीपक ने गेंद को अपना बताने के लिए उसके बारे में कौन-कौन सी बातें बताईं?

(ख) अगर दीपक और दिनेश गेंद के बारे में फ़ैसला करवाने तुम्हारे पास आते, तो तुम गेंद किसे देतीं? यह भी बताओ कि तुम यह फ़ैसला किन बातों को ध्यान में रखकर करतीं?

गेंद की कहानी

गेंद स्कूटर के साथ कहीं चली गई।

उसके बाद गेंद के साथ क्या-क्या हुआ होगा? सोचकर बताओ।

© NCERT not to be republished

पहचान

मान लो तुम्हारा कोई खिलौना घर में ही कहीं खो गया है। तुमने अपने साथियों को घर पर बुलाया है ताकि सब मिलकर उसे खोज लें।
तुम अपने खिलौने की पहचान के लिए अपने साथियों को कौन-कौन सी बातें बताओगी? लिखो।

....

....

....

....

....

कहाँ

सामने की क्यारी में भिंडियों के ऊँचे-ऊँचे पौधे थे।

एक ओर सीताफल की घनी बेल फैली हुई थी।

सीताफल की बेल होती है और भिंडी का पौधा। बताओ और कौन-कौन सी सब्ज़ियाँ बेल और पौधे पर लगती हैं?

बेल	पौधा
....	....
....	....
....	....
....	....

© NCERT not to be republished

तरह-तरह की गेंदें

गेंदों के अनेक रंग-रूप होते हैं। अलग-अलग खेलों में अलग-अलग प्रकार की गेंदों का इस्तेमाल किया जाता है। नीचे दी गई जगह में खेलों के अनुसार गेंदों की सूची बनाओ।

क्रिकेट	*किरमिच*
....	....
....	....
....	....
....	....

खोजो आस-पास

दिनेश चिक सरकाकर बरामदे की ओर भागा।

(क) चिक पर्दे का काम करती है पर चिक और पर्दे में फ़र्क होता है। इन दोनों में क्या अंतर है? समूह में चर्चा करो।

इसी तरह पता लगाओ कि इन शब्दों में क्या अंतर है?

- टहनी-तना
- पेड़-पौधा
- घूँस-चूहा
- मुँडेर-चारदीवारी

(ख) चिक सरकंडे से भी बनती है और तीलियों से भी।
सरकंडे से और क्या-क्या बनता है? अपने आसपास पता करो और लिखो।

....

....

© NCERT not to be republished

क्लब बनाएँ

मान लो तुम्हें अपने स्कूल में एक क्लब बनाना है जो स्कूल में खेल-कूद के कार्यक्रमों की तैयारी करेगा।

- इस क्लब में शामिल होने और इसको चलाने आदि के बारे में नियम सोचकर लिखो।
- तुम्हारे विचार से इस क्लब को अच्छी तरह चलाने के लिए नियमों की ज़रूरत है या नहीं? अपने जवाब का कारण भी बताओ।

एक, दो, तीन

दिनेश ने तिमंज़िली इमारत की ओर देखा।

जिस इमारत में तीन मंज़िलें हों, उसे तिमंज़िली इमारत कहते हैं।

बताओ, इन्हें क्या कहेंगे?

- जिस मकान में दो मंज़िलें हों ....
- जिस स्कूटर में दो पहिए हों ....
- जिस झंडे में तीन रंग हों ....
- जिस जगह पर चार राहें मिलती हों ....
- जिस स्कूटर में तीन पहिए हों ....

सब्ज़ी एक नाम अनेक

एक ही सब्ज़ी या फल के नाम अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग होते हैं। नीचे ऐसे कुछ नाम दिए गए हैं।

सीताफल	*कांदा*	*बटाटा*	*अमरूद*	*तोरी*	*शरीफ़ा*
काशीफल	*बैंगन*	*नेनुआ*	*तरबूज*	*कुम्हड़ा*	*घीया*

- बताओ कि तुम्हारे घर, शहर या कस्बे में इनमें से कौन-कौन से शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं?
- बाकी नामों का इस्तेमाल किन-किन स्थानों पर होता है? पता करो।

© NCERT not to be republished

कोई लाके मुझे दे

कुछ रंग भरे फूल
कुछ खट्टे-मीठे फल
थोड़ी बाँसुरी की धुन
थोड़ा जमुना का जल
कोई लाके मुझे दे!

एक सोना जड़ा दिन
एक रूपों भरी रात
एक फूलों भरा गीत
एक गीतों भरी बात
कोई लाके मुझे दे!

एक छाता छाँव का
एक धूप की घड़ी
एक बादलों का कोट
एक दूब की छड़ी
कोई लाके मुझे दे!

एक छुट्टी वाला दिन
एक अच्छी-सी किताब
एक मीठा-सा सवाल
एक नन्हा सा जवाब
कोई लाके मुझे दे!

दामोदर अग्रवाल

© NCERT not to be republished

0423CH04

4 पापा जब बच्चे थे

पापा जब छोटे थे, तो उनसे अक्सर पूछा जाता था, “बड़े होकर तुम क्या बनना चाहते हो?” पापा के पास जवाब हमेशा तैयार होता। मगर उनका जवाब हर बार अलग–अलग होता था।

शुरू–शुरू में पापा चौकीदार बनना चाहते थे। उन्हें यह सोचना बहुत अच्छा लगता था कि जब सारा शहर सोता है, चौकीदार जागता है। उन्हें यह सोचना भी अच्छा लगता था कि जब हर कोई सोया हुआ हो, वह खूब शोर मचा सकते हैं। उन्हें पक्का यकीन था कि बड़े होकर वह चौकीदार ही बनेंगे।

लेकिन एक दिन अपने चटकदार हरे ठेले को लिए आइसक्रीम वाला आ गया। भई वाह! पापा आइसक्रीम वाला बनेंगे। वह ठेले को लेकर घूम भी सकते हैं और जितना मन चाहे उतनी आइसक्रीम भी खा सकते हैं।

पापा ने सोचा, “मैं एक आइसक्रीम बेचूँगा तो एक खुद खाऊँगा। छोटे बच्चों को तो मैं मुफ़्त में आइसक्रीम दिया करूँगा।”

© NCERT not to be republished

जब पापा के माता-पिता ने यह सुना कि वह आइसक्रीम बेचनेवाला बनना चाहते हैं, तो उन्हें बहुत हैरानी हुई। उन्हें यह बात बहुत मज़ेदार लगी और वे खूब हँसे लेकिन पापा इसी बात पर अड़े रहे कि वह यही काम करेंगे।

फिर एक दिन रेलवे स्टेशन पर पापा ने एक अजीब आदमी को देखा। यह आदमी इंजनों और डिब्बों से खेल रहा था। लेकिन यह डिब्बे और इंजन खिलौने नहीं बल्कि असली थे, असली! कभी वह प्लेटफ़ार्म पर उछल कर आ जाता तो कभी डिब्बों के नीचे चला जाता। वह कोई बहुत अजीब और मज़ेदार खेल खेल रहा था।

पापा ने पूछा, "यह कौन है?"

उन्हें बताया गया, "यह शंटिंग करने वाला है।"

"शंटिंग किसे कहते हैं?" पापा ने पूछा।

"जब रेलगाड़ी अपनी यात्रा पूरी कर लेती है तो उसे अगली यात्रा के लिए तैयार करना होता है। रेलगाड़ी की साफ़-सफ़ाई की जाती है। इंजन को घुमाकर ईंधन-पानी भरा जाता है। इसे शंटिंग कहते हैं।" पापा को बताया गया।

बस, पापा को पता चल गया कि वह क्या बनेंगे! वह तो रेलगाड़ी के डिब्बों की शंटिंग करेंगे! इससे भी ज़्यादा मज़ेदार और क्या हो सकता है? ज़ाहिर है कि कुछ भी नहीं। जब पापा ने कहा कि वह शंटिंग करने वाला बनेंगे तो किसी ने उनसे पूछा, "मगर तुम तो कहते थे कि तुम आइसक्रीम बेचने का काम करोगे! अब आइसक्रीम बेचने के काम का क्या होगा?"

यह सचमुच समस्या थी। पापा ने शंटिंग करने वाला बनने की सोच ली थी, मगर आइसक्रीम बेचने का चटकदार हरा ठेला भी वह नहीं गँवाना चाहते थे। आखिर उन्होंने रास्ता निकाल लिया।

पापा ने जवाब दिया, "मैं शंटिंग करने वाला और आइसक्रीम बेचने वाला दोनों बनूँगा।"

© NCERT not to be republished

सबको बहुत अचंभा हुआ। उन्होंने पूछा, "तुम दोनों काम एक साथ कैसे करोगे?"

पापा ने कहा, "इसमें क्या मुश्किल है। आइसक्रीम मैं सुबह बेचा करूँगा। कुछ देर आइसक्रीम बेचने के बाद मैं स्टेशन चला जाया करूँगा। वहाँ मैं कुछ डिब्बों की शंटिंग करूँगा और फिर जाकर कुछ आइसक्रीम और बेच आऊँगा। इसके बाद मैं फिर स्टेशन चला जाऊँगा। कुछ डिब्बों की शंटिंग कर लूँगा, इसके बाद जाकर फिर कुछ आइसक्रीम और बेच लूँगा। इसमें ज़्यादा मुश्किल नहीं होगी क्योंकि अपना ठेला मैं स्टेशन के पास ही खड़ा करूँगा और इसलिए गाड़ियों के लिए मुझे ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ेगा।"

सब लोग फिर हँस पड़े। पापा गुस्से में आकर बोले, "अगर तुम मेरी हँसी उड़ाओगे तो मैं साथ में चौकीदार भी बन जाऊँगा। आखिर रात में करने के लिए होता ही क्या है!"

सभी कुछ तय हो गया, लेकिन एक दिन पापा को वायुयान चालक बनने की सूझी। इसके बाद उन्होंने अभिनेता बनने की सोची। इसके अलावा वह जहाज़ी भी बनना चाहते थे। कम से कम वह चरवाहा बनकर लाठी हिलाते हुए गायों के पीछे घूमते हुए अपने दिन बिताना तो चाहते ही थे।

अंत में एक दिन उन्होंने तय किया कि वह असल में जो बनना चाहते हैं वह है कुत्ता। उस दिन वह दिन भर चारों हाथ-पैरों पर इधर-उधर भागते हुए अजनबियों पर भौंकते रहे। एक बूढ़ी महिला ने उनके सिर को सहलाना चाहा तो पापा ने उन्हें काटने की कोशिश तक की! पापा ने भौंकना तो बड़ी अच्छी तरह से सीख लिया लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी वह अपने पैर से कान के पीछे खुजाना नहीं सीख पाए। उन्होंने सोचा कि अगर वह बाहर जाकर अपने पालतू कुत्ते के साथ बैठ जाएँ, तो शायद वह कान के पीछे खुजाना ज़्यादा जल्दी सीख जाएँगे। पापा कुत्ते के पास जाकर बैठ गए। उसी वक्त एक अजनबी फ़ौजी अफ़सर उधर से निकला। वह खड़ा होकर पापा को देखने लगा। वह उन्हें कुछ देर तक देखता रहा और फिर उसने पूछा, "यह तुम क्या कर रहे हो?"

पापा ने जवाब दिया, "मैं कुत्ता बनना सीख रहा हूँ।"

तब फ़ौजी ने पूछा, "तुम कुत्ता बनना क्यों चाहते हो?"

पापा ने कहा, "क्योंकि मैं काफ़ी दिन तक इंसान बनकर रह चुका हूँ।"

अफ़सर ने कहा, "बात तो सही है। पर क्या तुम जानते भी हो कि इंसान किसे कहते हैं?"

पापा ने पूछा, "मुझे तो नहीं पता। आप ही बता दीजिए।"

अफ़सर ने कहा, "इसके बारे में तुम अपने आप सोचो!"

अफ़सर वहाँ से चला गया। वह न तो हँसा और न मुस्कुराया। पापा सोचने लगे। वह सोचते ही रहे। अफ़सर ने उन्हें कोई

2024-25

बात भी नहीं समझाई थी पर अचानक ही यह बात पापा की समझ में आ गई कि वह रोज़-रोज़ अपना इरादा नहीं बदल सकते। अगली बार जब उनसे यही सवाल पूछा गया तो उन्हें अफ़सर की याद आ गई, और उन्होंने कहा, "मैं इंसान बनना चाहता हूँ।"

इस बार कोई भी नहीं हँसा और पापा समझ गए कि यही सबसे अच्छा जवाब है। आज भी वह यही समझते हैं। पहली बात तो यही है कि हमें अच्छा इंसान बनना चाहिए।

अलेक्सांद्र रस्किन

© NCERT not to be republished

तुम्हारी बात

(क) पापा ने जितने काम सोचे, उनमें से तुम्हें सबसे दिलचस्प काम कौन-सा लगता है? क्यों?

(ख) क्या तुम्हें भी घर में बताया जाता है कि तुम्हें बड़े होकर क्या काम करना है? कौन-कौन कहता है? क्या कहता है?

(ग) अपने मम्मी या पापा से पता करो कि वे जब बच्चे थे तब बड़े होकर क्या-क्या करने की सोचते थे।

(घ) अपने घर के किसी भी एक सदस्य से उसके काम के बारे में जानकारी हासिल करो।

- पता करो उनके काम को किस नाम से जाना जाता है?
- उस काम को अच्छी तरह करने के लिए कौन-कौन सी बातें मालूम होनी चाहिए?
- उन्हें अपने काम में किन बातों से परेशानी होती है?

कहानी से आगे

शुरू-शुरू में पापा चौकीदार बनना चाहते थे।

(क) चौकीदार रात को भी काम करते हैं। इसके अलावा और कौन-कौन से कामों में रात को जागना पड़ता है?

पापा कई तरह के काम करना चाहते थे।

(ख) क्या तुम किसी व्यक्ति को जानते हो जो एक से ज़्यादा तरह के काम करता है? उस व्यक्ति के बारे में बताओ।

आओ खेलें-*शेखचिल्ली कहता है*

पापा अपने पैर से कान के पीछे नहीं खुजा पाते थे। आओ देखें, तुम कौन-कौन से काम कर सकती हो! एक खेल खेलते हैं। खेल का नाम

© NCERT not to be republished

है—**शेखचिल्ली कहता है**। तुममें से एक बनेगा शेखचिल्ली। जो शेखचिल्ली कहेगा, बाकी सबको वैसे ही करना है।

शेखचिल्ली इस तरह के आदेश दे सकता है–

- शेखचिल्ली कहता है– अपने दायें हाथ को सिर के पीछे से ले जाकर नाक को पकड़ो।
- अपने दायें हाथ को दायीं टाँग के नीचे से ले जाकर दायाँ कान पकड़ो।
- शेखचिल्ली कहता है– खड़े होकर झुको।
- अपने हाथों से पैरों को छुओ।
- सिर अपने घुटनों से लगाओ।

ध्यान रहे, तुम्हें केवल वही आदेश मानना है जिसके साथ जुड़ा हो—शेखचिल्ली कहता है। अगर तुमने कोई और आदेश मान लिया तो तुम खेल से बाहर हो जाओगे।

सोच-विचार

अफ़सर के जाने के बाद पापा बहुत सोचते रहे। बताओ, वह क्या-क्या सोच रहे होंगे? सही (✓) का निशान लगाओ।

- यह अफ़सर आखिर है कौन?
- अब मैं रोज़-रोज़ अपना इरादा नहीं बदल सकता।
- कुत्ता बनना बड़ा कठिन काम है।
- ये फ़ौजी अफ़सर मुझ पर हँसा क्यों नहीं, बाकी सब तो हँसते हैं।
- इस अफ़सर को कुत्ता बनना नहीं आता। इसीलिए मुझे बहका रहा है।
- ....
- ....

© NCERT not to be republished

अगर.....

पापा ने कहा, "अपना ठेला मैं स्टेशन के पास ही खड़ा करूँगा।"

(क) अगर तुम पापा की जगह होतीं तो ठेला कहाँ लगातीं? ऐसा तुमने क्यों तय किया?

(ख) अगर तुम रेल से सफ़र करोगी तो तुम्हें प्लेटफ़ॉर्म और रेलगाड़ी में कौन-कौन लोग नज़र आएँगे?

परिवार

पापा के पापा को दादा कहते हैं। इन्हें तुम अपने घर में क्या कहकर बुलाओगी?

पापा के पापा	....	माँ के पापा	....
पापा की माँ	....	माँ की माँ	....
पापा के बड़े भाई	....	माँ के भाई	....
पापा की बहन	....	माँ की बहन	....
पापा के छोटे भाई	....	बहन के पति	....

एक शब्द के बदले दूसरा

पापा को वायुयान चालक बनने की सूझी। इसके बाद ***उन्होंने*** *अभिनेता बनने की सोची। इसके अलावा* ***वह*** *जहाज़ी भी बनना चाहते थे।*

ऊपर के वाक्यों में **उन्होंने** और **वह** का इस्तेमाल **पापा** की जगह पर हुआ है। हम अक्सर एक ही शब्द को दोहराने की बजाय उसकी जगह किसी दूसरे शब्द का इस्तेमाल करते हैं। ***मैं, तुम, इस*** भी ऐसे ही शब्द हैं।

(क) पाठ में से ऐसे शब्दों के पाँच उदाहरण छाँटो।

(ख) इनकी मदद से वाक्य बनाओ।

© NCERT not to be republished

कौन-किसमें तेज़

सभी बच्चे और बड़े किसी न किसी काम में माहिर होते हैं। कोई साइकिल चलाने में होशियार होता है तो कोई चित्र बनाने में तेज़ होता है। तुम्हारे दोस्तों और परिवार में कौन किस काम में माहिर है? उनके नाम लिखो।

- जो बढ़िया कहानी गढ़ सकते हैं ....
- जो खूबसूरत कढ़ाई कर सकते हैं ....
- जो कलाबाज़ियाँ खा सकते हैं ....
- जो दूसरों की बढ़िया नकल उतार सकते हैं ....
- जो हाथ से बढ़िया स्वेटर बुन सकते हैं ....
- जो सबके सामने किसी चीज़ के बारे में दो मिनट तक बता सकते हैं ....
- जो कठिन पहेलियाँ सुलझा सकते हैं ....
- जो खुलकर ज़ोर से हँस सकते हैं ....
- जो तरह-तरह की आवाज़ें बना सकते हैं ....
- जो अंदाज़े से ही चीज़ों का सही माप या वज़न बता सकते हैं ....
- जो बढ़िया अभिनय कर सकते हैं ....
- जो बेकार पड़ी चीज़ों से सुंदर चीज़ें बना सकते हैं ....

© NCERT not to be republished

तुम किन-किन चीज़ों में माहिर हो, यह भी बताओ।

....

....

....

....

....

कैसे थे पापा

नीचे लिखी पंक्तियाँ पढ़ो। इन पंक्तियों के आधार पर बताओ कि तुम पापा के बारे में क्या सोचती हो?

(क) पापा के पास जवाब हमेशा तैयार होता था।
ऐसा लगता है कि *पापा बहुत चतुर थे।*..........................

(ख) पापा का जवाब हमेशा अलग-अलग होता था।
ऐसा लगता है कि ....

(ग) मैं छोटे बच्चों को मुफ़्त में आइसक्रीम दिया करूँगा।
ऐसा लगता है कि ....

(घ) रात में करने के लिए होता ही क्या है? रात में मैं चौकीदारी करूँगा।
ऐसा लगता है कि ....

© NCERT not to be republished

उलझन

पापा कहते बनो डॉक्टर
माँ कहती इंजीनियर!

भैया कहते इससे अच्छा
सीखो तुम कंप्यूटर!

चाचा कहते बनो प्रोफ़ेसर
चाची कहतीं अफ़सर

दीदी कहती आगे चलकर
बनना तुम्हें कलेक्टर!

बाबा कहते फ़ौज में जाकर
जग में नाम कमाओ!

दीदी कहती घर में रहकर
ही उद्योग लगाओ!

सबकी अलग-अलग अभिलाषा
सबका अपना नाता!

लेकिन मेरे मन की उलझन
कोई समझ न पाता!

सुरेंद्र विक्रम

© NCERT not to be republished

एक साथ तीन सुख

© NCERT not to be republished

लुईस फर्नांडिस

© NCERT not to be republished

5 दोस्त की पोशाक

0423CH05

एक बार नसीरूद्दीन अपने बहुत पुराने दोस्त जमाल साहब से मिले। अपने पुराने दोस्त से मिलकर वे बड़े खुश हुए। कुछ देर गपशप करने के बाद उन्होंने कहा, "चलो दोस्त, मोहल्ले में घूम आएँ।"

जमाल साहब ने जाने से मना कर दिया और कहा, "अपनी इस मामूली सी पोशाक में मैं लोगों से नहीं मिल सकता।"

नसीरूद्दीन ने कहा, "बस इतनी सी बात!"

नसीरूद्दीन तुरंत उनके लिए अपनी एक भड़कीली अचकन निकाल कर लाए और कहा, "इसे पहन लो। इसमें तुम खूब अच्छे लगोगे। सब देखते रह जाएँगे।"

बनठन कर दोनों घूमने निकले। दोस्त को लेकर नसीरूद्दीन पड़ोसी के घर गए।

नसीरूद्दीन ने पड़ोसी से कहा, "ये हैं मेरे खास दोस्त, जमाल साहब। आज कई सालों बाद इनसे मुलाकात हुई है। वैसे जो अचकन इन्होंने पहन रखी है, वह मेरी है।"

यह सुनकर जमाल साहब पर तो मानो घड़ों पानी पड़ गया। बाहर निकलते ही मुँह बनाकर उन्होंने नसीरूद्दीन से कहा, "तुम्हारी कैसी अकल है! क्या यह बताना ज़रूरी था कि यह अचकन तुम्हारी है? तुम्हारा पड़ोसी सोच रहा होगा कि मेरे पास अपने कपड़े हैं ही नहीं।"

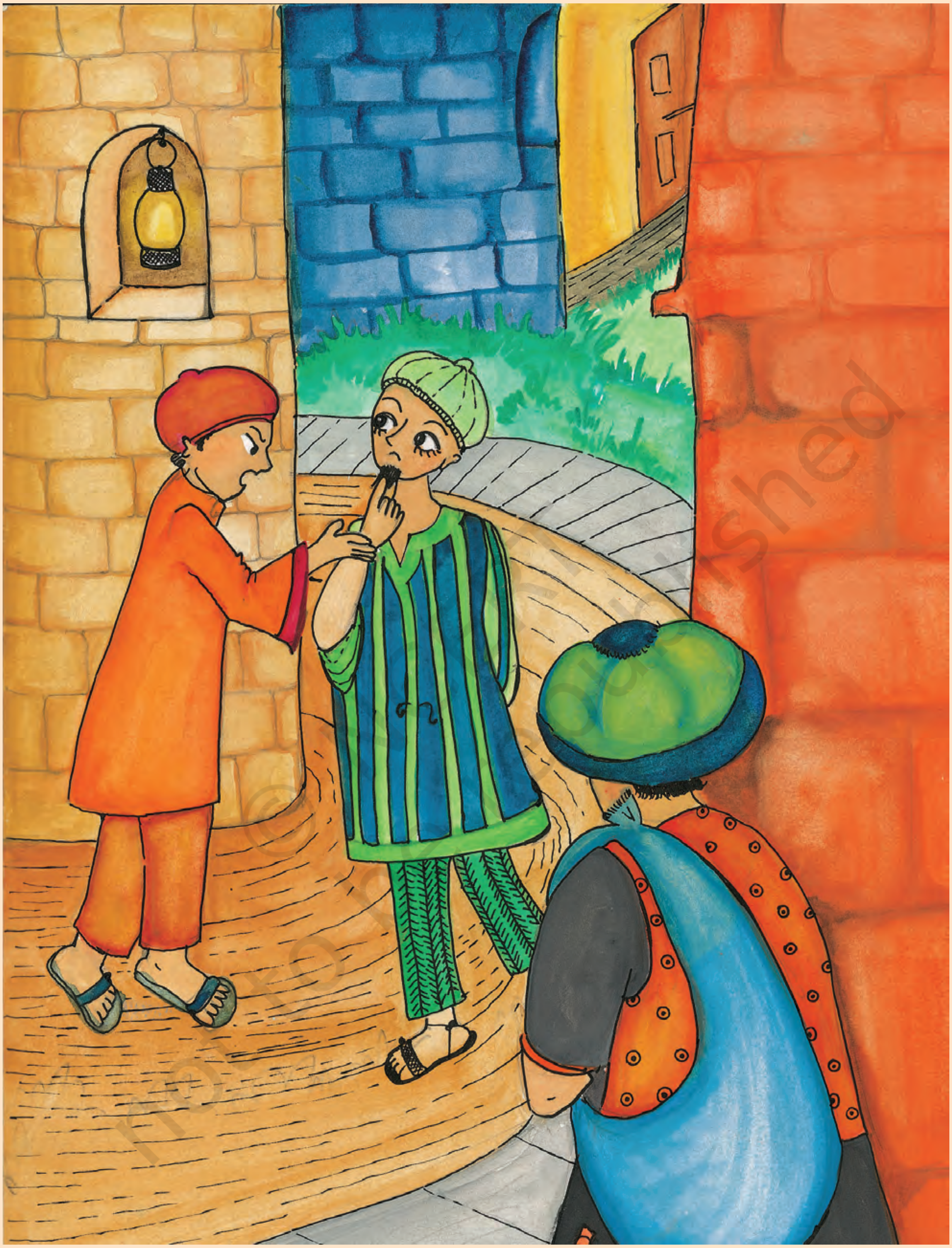

नसीरूद्दीन ने माफ़ी माँगते हुए कहा, "गलती हो गई। अब ऐसा नहीं कहूँगा।"

अब नसीरूद्दीन उन्हें हुसैन साहब से मिलवाने ले गए। हुसैन साहब ने गर्मजोशी से उनका स्वागत सत्कार किया। जब जमाल साहब के बारे में पूछा तो नसीरूद्दीन ने कहा, "जमाल साहब मेरे पुराने दोस्त हैं और इन्होंने जो अचकन पहनी है वह इनकी अपनी ही है।"

जमाल साहब फिर नाराज़ हो गए। बाहर आकर बोले, "झूठ बोलने को किसने कहा था तुमसे?"

"क्यों?" नसीरूद्दीन ने कहा, "तुमने जैसा चाहा, मैंने वैसा ही तो कहा।"

"पोशाक की बात कहे बिना काम नहीं चलता क्या? उसके बारे में न कहना ही अच्छा है", जमाल साहब ने समझाया।

जमाल साहब को लेकर नसीरूद्दीन आगे बढ़े। तभी एक अन्य पड़ोसी मिल गए। नसीरूद्दीन ने जमाल साहब का परिचय उनसे करवाया, "मैं आपका परिचय अपने पुराने दोस्त से करवा दूँ। यह हैं जमाल साहब और इन्होंने जो अचकन पहनी है उसके बारे में मैं चुप ही रहूँ तो अच्छा है।"

© NCERT not to be republished

तुम्हारे सवाल

कहानी के बारे में कोई पाँच प्रश्न बनाकर नीचे दी गई जगह में लिखो। कॉपी में उनके उत्तर लिखो।

- ....
....
- ....
....
- ....
....
- ....
....
- ....
....

तुम्हारी बात

नसीरूद्दीन और जमाल साहब बनठन कर घूमने के लिए निकले।

(क) तुम बनठन कर कहाँ-कहाँ जाते हो?

(ख) तुम किस-किस तरह से बनते-ठनते हो?

तुम्हारी समझ से

(क) तीसरे मकान से बाहर निकलकर जमाल साहब ने नसीरूद्दीन से क्या कहा होगा?

© NCERT not to be republished

(ख) जमाल साहब अपने मामूली से कपड़ों में घूमने क्यों नहीं जाना चाहते होंगे?

(ग) नसीरूद्दीन अपनी अचकन के बारे में हमेशा क्यों बताते होंगे?

गपशप

जब जमाल साहब और नसीरूद्दीन हुसैन साहब के घर से बाहर निकले तो उन्होंने अपनी बेगम को नसीरूद्दीन और जमाल साहब से मुलाकात का किस्सा सुनाया। उन दोनों के बीच में क्या बातचीत हुई होगी? लिखकर बताओ।

बेगम- कौन आया था?

हुसैन साहब–नसीरूद्दीन अपने दोस्त के साथ आया था।

बेगम – ....

घूमना-फिरना

नसीरूद्दीन ने कहा, "चलो दोस्त, मोहल्ले में घूम आएँ।"

जब नसीरूद्दीन अपने दोस्त से मिले, वे उसे अपना मोहल्ला दिखाने ले गए। जब तुम अपने दोस्तों से मिलते हो, तब क्या-क्या करते हो?

करके दिखाओ

नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं। तुम्हें इनका अभिनय करना है। तुम चाहो तो कहानी में देख सकते हो कि इन कामों का ज़िक्र कहाँ आया है।

- बनठन कर घूमने के लिए निकलना।
- घड़ों पानी पड़ना।
- मुँह बनाकर शिकायत करना।
- गर्मजोशी से स्वागत करना।
- नाराज़ होना।
- देखते ही रह जाना।

© NCERT not to be republished

घड़ों पानी पड़ना

नसीरूद्दीन की बात सुनकर जमाल साहब पर तो मानो घड़ों पानी पड़ गया।

(क) **घड़ों पानी पड़ना** एक मुहावरा है। इसका क्या मतलब हो सकता है? पता लगाओ। तुम इसका मतलब पता करने के लिए अपने साथियों या बड़ों से बातचीत कर सकते हो या शब्दकोश देख सकते हो।

(ख) इस मुहावरे को सुनकर मन में एक चित्र सा बनता है। तुम भी किन्हीं दो मुहावरों के बारे में चित्र बनाओ। कुछ मुहावरे हम दे देते हैं। तुम चाहो तो इनमें से कोई पसंद कर सकते हो–

- सिर मुंडाते ही ओले पड़ना
- ऊँट के मुँह में जीरा
- दीया तले अँधेरा
- ईद का चाँद

कौन है कैसा

*नसीरूद्दीन एक **भड़कीली अचकन** निकालकर लाए।*

भड़कीली शब्द बता रहा है कि अचकन कैसी थी। कहानी में से ऐसे ही और शब्द छाँटो जो किसी के बारे में कुछ बताते हों। उन्हें छाँटकर नीचे दी गई जगह में लिखो।

देखें, कौन सबसे ज़्यादा ऐसे शब्द ढूँढ़ पाता है।

पुराना दोस्त	....	....
....	....	....
....	....	....

भड़कीली, पुराना जैसे शब्द किसी के बारे में कुछ खास या विशेष बात बता रहे हैं। इसलिए इन्हें **विशेषण** कहते हैं।

© NCERT not to be republished

पास-पड़ोस

पड़ोस के घर में जाकर नसीरूद्दीन पड़ोसी से मिले।

तुम अपने पड़ोसी बच्चों के साथ बहुत-से खेल खेलते हो। पर क्या तुम उनके परिवार के बारे में जानते हो?

चलो, दोस्तों के बारे में और जानकारी इकट्ठी करते हैं। यदि तुम चाहो तो उनसे ये बातें पूछ सकते हो–

- घर में कुल कितने लोग हैं?
- उनके नाम क्या हैं?
- उनकी आयु क्या है?
- वे क्या काम करते हैं?

इस सूची में तुम अपने मन से बहुत-से सवाल जोड़ सकते हो।

शब्दों का हेरफेर

झूठा - जूठा

इन शब्दों को बोलकर देखो। ये मिलती-जुलती आवाज़ वाले शब्द हैं। ज़रा से अंतर से भी शब्द का अर्थ बदल जाता है।

नीचे इसी तरह के कुछ शब्दों के जोड़े दिए गए हैं। इन सबके अर्थ अलग-अलग हैं। इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।

घड़ा – गढ़ा	घूम – झूम	राज – राज़
फ़न – फन	सजा – सज़ा	खोल – खौल

© NCERT not to be republished

नसीरूद्दीन का निशाना

एक दिन नसीरूद्दीन अपने दोस्तों के साथ बैठे बतिया रहे थे। बात ही बात में उन्होंने गप्प मारना शुरू कर दिया, "तीरंदाज़ी में मेरा मुकाबला कोई नहीं कर सकता। मैं धनुष कसता हूँ, निशाना साधता हूँ और तीर छोड़ता हूँ, शूँ... ऊँ... ऊँ। तीर सीधे निशाने पर लगता है।" दोस्तों को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने नसीरूद्दीन की परीक्षा लेने का फ़ैसला किया। एक दोस्त भागा-भागा गया और तीर-धनुष खरीदकर ले आया। नसीरूद्दीन को थमाते हुए उसने कहा, "ये लो तीर-धनुष और अब साधो अपना निशाना उस लक्ष्य पर। देखते हैं कि तुम सच बोल रहे हो या झूठ।"

नसीरूद्दीन फँस गए। उन्होंने धनुष अपने हाथों में उठाया, डोर खींची, निशाना साधा और छोड़ दिया तीर को।

शूँ... ऊँ... ऊँ...।

तीर निशाने पर नहीं लगा। बल्कि वह तो बीच में ही कहीं गिर गया।

"हा! हा! हा! हा! हा!" सभी दोस्त हँसने लगे।

"क्या यही तुम्हारा बेहतरीन निशाना था?" उन्होंने कहा।

© NCERT not to be republished

“नहीं, नहीं! हरगिज़ नहीं! यह तो काज़ी का निशाना था। मैं तो तुम्हें दिखा रहा था कि काज़ी कैसे निशाना लगाता है”, इतना कहते हुए नसीरूद्दीन ने दुबारा धनुष उठाया, डोर खींची, निशाना साधा और तीर को छोड़ दिया।

शूँ... ऊँ... ऊँ...।

इस बार तीर पहले वाले तीर से तो थोड़ा आगे गिरा पर निशाना फिर भी चूक गया।

दोस्तों ने कहा, “यह तो ज़रूर तुम्हारा ही निशाना था नसीरूद्दीन।”

“बिल्कुल नहीं”, नसीरूद्दीन ने कहा, “यह मेरा नहीं, सेनापति का निशाना था।”

एक दोस्त ने ताना कसा, “सूची में अब अगला कौन है?”

इतना सुनते ही सबने जमकर ठहाका लगाया।

नसीरूद्दीन खामोश रहा। उसने चुपचाप एक और तीर उठाया।

नसीरूद्दीन ने एक बार फिर तीर चलाया।

शूँ... ऊँ... ऊँ... !

इस बार तीर ठीक निशाने पर लग गया। सभी आश्चर्य से नसीरूद्दीन की ओर मुँह बाए ताकने लगे। इससे पहले कि कोई कुछ कह पाता नसीरूद्दीन ने एक विजेता के अंदाज़ में कहा, “देखा तुमने! यह था मेरा निशाना।”

2024-25

© NCERT not to be republished

0423CH06

6 नाव बनाओ नाव बनाओ

नाव बनाओ, नाव बनाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

वह देखो, पानी आया है,
घिर-घिर कर बादल छाया है,
सात समुंदर भर लाया है,

तुम रस का सागर भर लाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

पानी सचमुच खूब पड़ेगा,
लंबी-चौड़ी गली भरेगा,
लाकर घर में नदी धरेगा,

ऐसे में तुम भी लहराओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

गुल्लक भारी, अपनी खोलो,
हल्की मेरी, नहीं टटोलो,
पैसे नए-नए ही रोलो,

© NCERT not to be republished

फिर बाज़ार लपक तुम लाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

ले आओ कागज़ चमकीला,
लाल–हरा या नीला–पीला,
रंग–बिरंगा खूब रंगीला,

कैंची, चुटकी, हाथ चलाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

छप–छप कर कूड़े से अड़ती,
बूँदों–लहरों लड़ती–बढ़ती,
सब की आँखों चढ़ती–गढ़ती

नाव तैरा मुझको हर्षाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

क्या कहते? मेरे क्या बस का?
क्यों? तब फिर यह किसके बस का?
खोट सभी है बस आलस का,

आलस छोड़ो सब कर पाओ।
भैया मेरे, जल्दी आओ।।

हरिकृष्णदास गुप्त

© NCERT not to be republished

कविता से

क्या कहते? मेरे क्या बस का?

(क) भैया ने क्या बहाना किया? क्यों?

....

....

बूँदों-लहरों लड़ती-बढ़ती

(ख) कौन बूँदों और लहरों से लड़ते हुए आगे बढ़ रही है?

....

....

गुल्लक भारी, अपनी खोलो।

(ग) किसकी गुल्लक भारी है? किसकी गुल्लक हल्की है?

....

....

नाव की कहानी

एक बार फिर से कविता पढ़ो। इस कविता में एक नाव के बनने और पानी में सफ़र करने की कहानी छिपी है। मान लो तुम ही वह नाव हो। अब अपनी कहानी सबको सुनाओ।

शुरुआत हम कर देते हैं।

मैं एक नाव हूँ मैं कागज़ से बनी हूँ। मुझे एक लड़के ने बनाया। उसका नाम तो मुझे नहीं पता पर ....

....

© NCERT not to be republished

अहा! बारिश!!

- तुमने बरसात पर पहले भी कभी कोई कविता या लोकगीत सुना होगा। उसे नीचे दी गई जगह में लिखो।

© NCERT not to be republished

- इस कविता को पढ़ते समय तुम्हारे मन में कई चित्र आए होंगे। उनके बारे में बताओ या उनका चित्र बनाओ।

सचमुच

पानी सचमुच खूब पड़ेगा।

सचमुच का इस्तेमाल करते हुए तुम भी दो वाक्य बनाओ।

(क) ....

(ख) ....

सात समुद्र

घिर-घिर कर बादल छाया है,
सात समुंदर भर लाया है।

(क) पता करो, सात समुद्र कौन-कौन से होंगे जिनसे बादल पानी भरकर लाया है।

(ख) क्या सचमुच बारिश के बादल समुद्र से पानी लाते हैं? वे इतना सारा पानी कैसे लाते होंगे? आपस में बातचीत करके पता करो।
(तुम इस काम में बड़ों की या किताबों की मदद भी ले सकती हो।)

© NCERT not to be republished

तरह-तरह की नावें

तुम कागज़ से कितनी तरह की नाव बना सकते हो? बनाकर कक्षा में दिखाओ। उनमें से किसी एक के बारे में लिखकर बताओ कि तुमने वह कैसे बनाई।

© NCERT not to be republished

आई बरसात

(क) बरसात के दिनों में अक्सर घरों के दरवाज़े और खिड़कियों से पानी की बौछार आ जाती है। कभी-कभी छत से पानी टपकता है, सीलन भी आ जाती है। ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए तुम्हारे घर में क्या-क्या किया जाता है?

(ख) बारिश के मौसम में गलियों और सड़कों पर भी पानी भर जाता है। तुम्हारे मोहल्ले और घर के आस-पास बारिश आने पर क्या-क्या होता है? बताओ।

काम वाले शब्द

(क) पिछले साल रिमझिम में तुमने पढ़ा था कि **बनाना** काम वाला शब्द होता है। काम वाले शब्दों को **क्रिया** कहते हैं। इस कविता में ढेर सारी क्रियाएँ या काम वाले शब्द आए हैं। उन्हें छाँटो और नीचे लिखो।

....	....
....	....
....	....
....	....

(ख) तुमने जो क्रियाएँ छाँटी हैं, वर्णमाला के हिसाब से उनके आगे 1, 2, 3 आदि लिखकर उन्हें क्रम से लगाओ।

© NCERT not to be republished

0423CH07

7 दान का हिसाब

एक था राजा। राजा जी लकदक कपड़े पहनकर यूँ तो हज़ारों रुपए खर्च करते रहते थे, पर दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

राजसभा में एक से एक नामी लोग आते रहते थे, लेकिन गरीब, दुखी, विद्वान, सज्जन इनमें से कोई भी नहीं आता था क्योंकि वहाँ पर इनका बिल्कुल सत्कार नहीं होता था।

एक बार उस देश में अकाल पड़ गया। पूर्वी सीमा के लोग भूखे-प्यासे मरने लगे। राजा के पास खबर आई। वे बोले, ''यह तो भगवान की मार है, इसमें मेरा कोई हाथ नहीं है।''

लोगों ने कहा, "महाराज, राजभंडार से हमारी सहायता करने की कृपा करें, जिससे हम लोग दूसरे देशों से अनाज खरीदकर अपनी जान बचा सकें।"

राजा ने कहा, "आज तुम लोग अकाल से पीड़ित हो, कल पता चलेगा, कहीं भूकंप आया है। परसों सुनूँगा, कहीं के लोग बड़े गरीब हैं, दो वक्त की रोटी नहीं जुटती। इस तरह सभी की सहायता करते-करते जब राजभंडार खत्म हो जाएगा तब खुद मैं ही दिवालिया हो जाऊँगा।"

यह सुनकर सभी निराश होकर लौट गए।

© NCERT not to be republished

इधर अकाल का प्रकोप फैलता ही जा रहा था। न जाने रोज़ कितने ही लोग भूख से मरने लगे। लोग फिर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजसभा में गुहार लगाई, "दुहाई महाराज! आपसे ज़्यादा कुछ नहीं चाहते, सिर्फ़ दस हज़ार रुपए हमें दे दें तो हम आधा पेट खाकर भी ज़िंदा रह जाएँगे।"

राजा ने कहा, "दस हज़ार रुपए भी क्या तुम्हें बहुत कम लग रहे हैं? और उतने कष्ट से जीवित रहकर लाभ ही क्या है!"

एक व्यक्ति ने कहा, "भगवान की कृपा से लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो। उसमें से एक-आध लोटा ले लेने से महाराज का क्या नुकसान हो जाएगा!"

राजा ने कहा, "राजकोष में अधिक धन है तो क्या उसे दोनों हाथों से लुटा दूँ?"

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "महल में प्रतिदिन हज़ारों रुपए इन सुगंधित वस्त्रों, मनोरंजन और महल की सजावट में खर्च होते हैं। यदि इन रुपयों में से ही थोड़ा-सा धन ज़रूरतमंदों को मिल जाए तो उन दुखियों की जान बच जाएगी।"

यह सुनकर राजा को क्रोध आ गया। वह गुस्से से बोला, "खुद भिखारी होकर मुझे उपदेश दे रहे हो? मेरा रुपया है, मैं चाहे उसे उबालकर खाऊँ चाहे तलकर! मेरी मर्ज़ी। तुम अगर इसी तरह बकवास करोगे तो मुश्किल में पड़ जाओगे। इसलिए इसी वक्त तुम चुपचाप खिसक जाओ।"

राजा का क्रोध देखकर लोग वहाँ से चले गए।

राजा हँसते हुए बोला, "छोटे मुँह बड़ी बात! अगर सौ-दो सौ रुपए होते तो एक बार सोच भी सकता था। पहरेदारों की खुराक दो-चार दिन कम कर देता और यह रकम पूरी भी हो जाती। मगर सौ-दो सौ से इन लोगों का पेट नहीं भरेगा, एकदम दस हज़ार माँग बैठे। छोटे लोगों के कारण नाक में दम हो गया है।"

© NCERT not to be republished

यह सुनकर वहाँ उपस्थित लोग हाँ–हूँ कह कर रह गए। मगर मन ही मन उन्होंने भी सोचा, "राजा ने यह ठीक नहीं किया। ज़रूरतमंदों की सहायता करना तो राजा का कर्त्तव्य है।"

दो दिन बाद न जाने कहाँ से एक बूढ़ा संन्यासी राजसभा में आया। उसने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा, "दाता कर्ण महाराज! बड़ी दूर से आपकी प्रसिद्धि सुनकर आया हूँ। संन्यासी की इच्छा भी पूरी कर दें।"

अपनी प्रशंसा सुनकर राजा बोला, "ज़रा पता तो चले तुम्हें क्या चाहिए? यदि थोड़ा कम माँगो तो शायद मिल भी जाए।"

संन्यासी ने कहा, "मैं तो संन्यासी हूँ। मैं अधिक धन का क्या करूँगा! मैं राजकोष से बीस दिन तक बहुत मामूली भिक्षा प्रतिदिन लेना चाहता हूँ। मेरा भिक्षा लेने का नियम इस प्रकार है, मैं पहले दिन जो लेता हूँ, दूसरे दिन उसका दुगुना, फिर तीसरे दिन उसका दुगुना, फिर चौथे दिन तीसरे दिन का दुगुना। इसी तरह से प्रतिदिन दुगुना लेता जाता हूँ। भिक्षा लेने का मेरा यही तरीका है।"

राजा बोला, "तरीका तो समझ गया। मगर पहले दिन कितना लेंगे, यही असली बात है। दो–चार रुपयों से पेट भर जाए तो अच्छी बात है, मगर एकदम से बीस–पचास माँगने लगे, तब तो बीस दिन में काफ़ी बड़ी रकम हो जाएगी।"

संन्यासी ने हँसते हुए कहा, "महाराज, मैं लोभी नहीं हूँ। आज मुझे एक रुपया दीजिए, फिर बीस दिन तक दुगुने करके देते रहने का हुक्म दे दीजिए।"

यह सुनकर राजा, मंत्री और दरबारी सभी की जान में जान आई। राजा ने हुक्म दे दिया कि संन्यासी के कहे अनुसार बीस दिन तक राजकोष से उन्हें भिक्षा दी जाती रहे।

संन्यासी राजा की जय-जयकार करते हुए घर लौट गए।

राजा के आदेश के अनुसार राजभंडारी प्रतिदिन हिसाब करके संन्यासी को भिक्षा देने लगा। इस तरह दो दिन बीते, दस दिन बीते। दो सप्ताह तक भिक्षा देने के बाद भंडारी ने हिसाब करके देखा कि दान में काफ़ी धन निकला जा रहा है। यह देखकर उन्हें उलझन महसूस होने लगी। महाराज तो कभी किसी को इतना दान नहीं देते थे। उसने यह बात मंत्री को बताई।

मंत्री ने कुछ सोचते हुए कहा, "वाकई, यह बात तो पहले ध्यान में ही नहीं आई थी। मगर अब कोई उपाय भी नहीं है। महाराज का हुक्म बदला नहीं जा सकता।"

इसके बाद फिर कुछ दिन बीते। भंडारी फिर हड़बड़ाता हुआ मंत्री के पास पूरा हिसाब लेकर आ गया। हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

वह अपना पसीना पोंछकर, सिर खुजलाकर, दाढ़ी में हाथ फेरते हुए बोला, "यह क्या कह रहे हो! अभी से इतना धन चला गया है! तो फिर बीस दिनों के अंत में कितने रुपए होंगे?

भंडारी बोला, "जी, पूरा हिसाब तो नहीं किया है।"

मंत्री ने कहा, "तो तुरंत बैठकर, अभी पूरा हिसाब करो।"

© NCERT not to be republished

भंडारी हिसाब करने बैठ गया। मंत्री महाशय अपने माथे पर बर्फ़ की पट्टी लगाकर तेज़ी से पंखा झलवाने लगे।

कुछ ही देर में भंडारी ने पूरा हिसाब कर लिया।

मंत्री ने पूछा, “कुल मिलाकर कितना हुआ?”

भंडारी ने हाथ जोड़कर कहा, “जी, दस लाख अड़तालीस हज़ार पाँच सौ पिचहत्तर रुपए।”

मंत्री को गुस्सा आ गया वह बोला, “मज़ाक कर रहे हो?” यदि संन्यासी को इतने रुपए दे दिए तब तो राजकोष खाली हो जाएगा।”

भंडारी ने कहा, “मज़ाक क्यों करूँगा? आप ही हिसाब देख लीजिए।”

यह कहकर उसने हिसाब का कागज़ मंत्री जी को दे दिया। हिसाब देखकर मंत्री जी को चक्कर आ गया। सभी उन्हें सँभालकर बड़ी मुश्किलों से राजा के पास ले गए।

राजा ने पूछा, “क्या बात है?”

मंत्री बोले, “महाराज, राजकोष खाली होने जा रहा है।”

राजा ने पूछा, “वह कैसे?”

मंत्री बोले, “महाराज, संन्यासी को आपने भिक्षा देने का हुक्म दिया है।

© NCERT not to be republished

दान का हिसाब

पहला दिन	1 रुपया
दूसरा दिन	2 रुपए
तीसरा दिन	4 रुपए
चौथा दिन	8 रुपए
पाँचवाँ दिन	16 रुपए
छठा दिन	32 रुपए
सातवाँ दिन	64 रुपए
आठवाँ दिन	128 रुपए
नवाँ दिन	256 रुपए
दसवाँ दिन	512 रुपए
ग्यारहवाँ दिन	1024 रुपए
बारहवाँ दिन	2048 रुपए
तेरहवाँ दिन	4096 रुपए
चौदहवाँ दिन	8192 रुपए
पंद्रहवाँ दिन	16384 रुपए
सोलहवाँ दिन	32768 रुपए
सत्रहवाँ दिन	65536 रुपए
अठारहवाँ दिन	131072 रुपए
उन्नीसवाँ दिन	262144 रुपए
बीसवाँ दिन	524288 रुपए
कुल	**1048575 रुपए**

मगर अब पता चला है कि उन्होंने इस तरह राजकोष से करीब दस लाख रुपए झटकने का उपाय कर लिया है।"

राजा ने गुस्से से कहा, "मैंने इतने रुपए देने का आदेश तो नहीं दिया था। फिर इतने रुपए क्यों दिए जा रहे हैं? भंडारी को बुलाओ।"

मंत्री ने कहा, "जी सब कुछ आपके हुक्म के अनुसार ही हुआ है। आप खुद ही दान का हिसाब देख लीजिए।"

राजा ने उसे एक बार देखा, दो बार देखा, इसके बाद वह बेहोश हो गया। सब परेशान हो गए। काफ़ी कोशिशों के बाद उनके होश में आ जाने पर लोग संन्यासी को बुलाने दौड़े।

संन्यासी के आते ही राजा रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा। बोला, "दुहाई है संन्यासी महाराज, मुझे इस तरह जान-माल से मत मारिए। जैसे भी हो एक समझौता करके मुझे वचन से मुक्त कर दीजिए।

© NCERT not to be republished

अगर आपको बीस दिन तक भिक्षा दी गई तो राजकोष खाली हो जाएगा। फिर राज–काज कैसे चलेगा!"

संन्यासी ने गंभीर होकर कहा, "इस राज्य में लोग अकाल से मर रहे हैं। मुझे उनके लिए केवल पचास हज़ार रुपए चाहिए। वह रुपया मिलते ही मैं समझूँगा मुझे मेरी पूरी भिक्षा मिल गई है। बस मुझे कुछ और नहीं चाहिए।"

राजा ने कहा, "परंतु उस दिन एक आदमी ने मुझसे कहा था कि लोगों के लिए दस हज़ार रुपए ही बहुत होंगे।"

संन्यासी ने कहा, "मगर आज मैं कहता हूँ कि पचास हज़ार से एक पैसा कम नहीं लूँगा।"

राजा गिड़गिड़ाया, मंत्री गिड़गिड़ाए, सभी गिड़गिड़ाए। मगर संन्यासी अपने वचन पर डटा रहा। आखिरकार लाचार होकर राजकोष से पचास हज़ार रुपए संन्यासी को देने के बाद ही राजा की जान बची।

पूरे देश में खबर फैल गई कि अकाल के कारण राजकोष से पचास हज़ार रुपए राहत में दिए गए हैं। सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

सुकुमार राय

© NCERT not to be republished

कहानी से

(क) राजा किसी को भी दान क्यों नहीं देना चाहता था?

(ख) राजदरबार के लोग मन ही मन राजा को बुरा कहते थे लेकिन वे राजा का विरोध क्यों नहीं कर पाते थे?

(ग) राजसभा में सज्जन और विद्वान लोग क्यों नहीं जाते थे?

(घ) संन्यासी ने सीधे-सीधे शब्दों में भिक्षा क्यों नहीं माँग ली?

(ङ) राजा को संन्यासी के आगे गिड़गिड़ाने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

अंदाज़ अपना-अपना

तुम नीचे दिए गए वाक्यों को किस तरह से कहोगे?

(क) दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

(ख) हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

(ग) संन्यासी की बात सुनकर सभी की जान में जान आई।

(घ) लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो।

साथी हाथ बढ़ाना

कभी-कभी कुछ इलाकों में बारिश बिल्कुल भी नहीं होती। नदी-नाले, तालाब सब सूख जाते हैं। फ़सलों के लिए पानी नहीं मिलता। खेत सूख जाते हैं। पशु-पक्षी, जानवर, लोग भूखे मरने लगते हैं। ऐसे समय में वहाँ रहने वाले लोगों को मदद की ज़रूरत होती है। तुम भी लोगों की मदद ज़रूर कर सकते हो। सोचकर बताओ तुम अकाल में परेशान लोगों की मदद कैसे करोगे?

© NCERT not to be republished

ज़िम्मेदारी अपनी-अपनी

तुम्हारे विचार से राजदरबार में किसकी क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ होंगी?

(क) मंत्री

(ख) भंडारी

कर्ण जैसा दानी

सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

पता करो कि–

(क) कर्ण कौन थे?

(ख) कर्ण जैसे दानी का क्या मतलब है?

(ग) दान क्या होता है?

(घ) किन-किन कारणों से लोग दान करते हैं?

कहानी और तुम

(क) राजा राजकोष के धन का उपयोग किन-किन कामों में करता था?

- तुम्हारे घर में जो पैसा आता है वह कहाँ-कहाँ खर्च होता है? पता करके लिखो।

(ख) अकाल के समय लोग राजा से कौन-कौन से काम करवाना चाहते थे?

- तुम अपने स्कूल या इलाके में क्या-क्या काम करवाना चाहते हो?

कैसा राजा!

(क) राजा किसी को दान देना पसंद नहीं करता था।
तुम्हारे विचार से राजा सही था या गलत?
अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

(ख) राजा दान देने के अलावा और किन-किन तरीकों से लोगों की सहायता कर सकता था?

© NCERT not to be republished

पूर्व और पूर्व

पूर्वी सीमा के लोग भूखे प्यासे मरने लगे।

(क) 'पूर्व' शब्द के दो अर्थ हैं

पूर्व–एक दिशा

पूर्व–पहले।

नीचे ऐसे ही कुछ और शब्द दिए गए हैं जिनके दो-दो अर्थ हैं। इनका प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाओ।

जल ....

....

मन ....

....

मगर ....

....

(ख) नीचे चार दिशाओं के नाम लिखे हैं।

तुम्हारे घर और स्कूल के आसपास इन दिशाओं में क्या-क्या है? तालिका भरो–

दिशा	घर के पास	स्कूल के पास
पूर्व		
पश्चिम		
उत्तर		
दक्षिण		

© NCERT not to be republished

0423CH08

8 कौन?

किसने बटन हमारे कुतरे?
किसने स्याही को बिखराया?
कौन चट कर गया दुबक कर
घर-भर में अनाज बिखराया?

दोना खाली रखा रह गया
कौन ले गया उठा मिठाई?
दो टुकड़े तसवीर हो गई
किसने रस्सी काट बहाई?

कभी कुतर जाता है चप्पल
कभी कुतर जूता है जाता,
कभी खलीता पर बन आती
अनजाने पैसा गिर जाता

किसने जिल्द काट डाली है?
बिखर गए पोथी के पन्ने।
रोज़ टाँगता धो-धोकर मैं
कौन उठा ले जाता छन्ने?

© NCERT not to be republished

कुतर-कुतर कर कागज़ सारे
रद्दी से घर को भर जाता।
कौन कबाड़ी है जो कूड़ा
दुनिया भर का घर भर जाता?

कौन रात भर गड़बड़ करता?
हमें नहीं देता है सोने,
खुर-खुर करता इधर-उधर है
ढूँढ़ा करता छिप-छिप कोने?

रोज़ रात-भर जगता रहता
खुर-खुर इधर-उधर है धाता
बच्चों उसका नाम बताओ
कौन शरारत यह कर जाता?

सोहन लाल द्विवेदी

© NCERT not to be republished

कविता से

(क) कविता पढ़कर बताओ कि यह शरारती जीव घर में कहाँ-कहाँ गया?

(ख) किस तरह की चीज़ों का सबसे ज़्यादा नुकसान हुआ?

(ग) कविता में बहुत से नुकसान गिनाए गए हैं। तुम्हारे हिसाब से इनमें से कौन-सा नुकसान सबसे बड़ा है? क्यों?

(घ) इस कविता में किसकी शैतानियों की बात कही गई है? तुमने कैसे अनुमान लगाया?

कभी कुतर जाता है चप्पल

शरारती जीव ने बहुत सारी चीज़ों को कुतरा, बिखराया और काटा। अब तुम बताओ कि किन-किन चीज़ों को–

कुतरा जा सकता है	बिखराया जा सकता है	काटा जा सकता है
....	....	....
....	....	....
....	....	....

© NCERT not to be republished

कबाड़ का हिसाब

(क) कबाड़ी क्या-क्या सामान खरीदते हैं?

(ख) तुम्हारे घर से सामान ले जाकर कबाड़ी उसका क्या करते हैं?

(ग) पता करो कि पुराना अखबार या रद्दी किस भाव से बिकते हैं?

(घ) अगर कबाड़ी तुम्हारे घर का कबाड़ न खरीदे तो क्या होगा?

घुसपैठ

(क) तुम्हारे घर में भी यदि यह शरारती जीव है या उसकी फ़ौज घुस गई है तो पता करो कि उससे कैसे निपटा जाता है।

(ख) इस शरारती जीव के अलावा और कौन-कौन से जीव तुम्हारे घर में घुस जाते हैं?

....

....

....

बूझो

नीचे लिखी कविता की पंक्तियाँ पढ़ो। जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उनका अर्थ आपस में चर्चा करके बताओ।

(क) *कभी खलीता पर बन आती*
अनजाने पैसा गिर जाता

(ख) *रोज़ टाँगता धो-धोकर मैं*
कौन उठा ले जाता छन्ने

(ग) *रोज़ रात-भर जगता रहता*
खुर-खुर इधर-उधर है धाता

© NCERT not to be republished

9 स्वतंत्रता की ओर

धनी को पता था कि आश्रम में कोई बड़ी योजना बन रही है, पर उसे कोई कुछ न बताता। "वे सब समझते हैं कि मैं नौ साल का हूँ इसलिए मैं बुद्धू हूँ। पर मैं बुद्धू नहीं हूँ!" धनी मन ही मन बड़बड़ाया।

धनी और उसके माता-पिता, बड़ी खास जगह में रहते थे— अहमदाबाद के पास, महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में। जहाँ पूरे भारत से लोग रहने आते थे। गांधी जी की तरह वे सब भी भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। जब वे आश्रम में ठहरते तो चरखों पर खादी का सूत कातते, भजन गाते और गांधी जी की बातें सुनते।

साबरमती में सबको कोई न कोई काम करना होता— खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना, कुएँ से पानी लाना, गाय और बकरियों का दूध दुहना और सब्ज़ी उगाना। धनी का काम था बिन्नी की देखभाल करना। बिन्नी, आश्रम की एक बकरी थी। धनी को अपना काम पसंद था, क्योंकि बिन्नी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी। धनी को उससे बातें करना अच्छा लगता था।

उस दिन सुबह, धनी बिन्नी को हरी घास खिला कर, उसके बर्तन में पानी डालते हुए

© NCERT not to be republished

बोला, “कोई बात ज़रूर है बिन्नी! वे सब गांधी जी के कमरे में बैठकर बातें करते हैं। कोई योजना बनाई जा रही है। मैं सब समझता हूँ।”

बिन्नी ने घास चबाते हुए सिर हिलाया, जैसे कि वह धनी की बात समझ रही हो। धनी को भूख लगी। कूदती-फाँदती बिन्नी को लेकर वह रसोईघर की तरफ़ चला। उसकी माँ चूल्हा फूँक रही थीं और कमरे में धुआँ भर रहा था।

“अम्मा, क्या गांधी जी कहीं जा रहे हैं?” उसने पूछा।

खाँसते हुए माँ बोलीं, “वे सब यात्रा पर जा रहे हैं।”

“यात्रा? कहाँ जा रहे हैं?” धनी ने सवाल किया।

“समुद्र के पास कहीं। अब सवाल पूछना बंद करो और जाओ यहाँ से धनी!” अम्मा ज़रा गुस्से से बोलीं, “पहले मुझे खाना पकाने दो।”

धनी सब्ज़ी की क्यारियों की तरफ़ निकल गया जहाँ बूढ़ा बिंदा आलू खोद रहा था। “बिंदा चाचा,” धनी उनके पास बैठ गया, “आप भी यात्रा पर जा रहे हैं क्या?” बिंदा ने सिर हिलाकर मना किया। उसके कुछ बोलने से पहले धनी ने उतावले होकर पूछा, “कौन जा रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं? क्या हो रहा है?”

© NCERT not to be republished

बिंदा ने खोदना रोक दिया और कहा, "तुम्हारे सब सवालों के जवाब दूँगा पर पहले इस बकरी को बाँधो! मेरा सारा पालक चबा रही है!"

धनी बिन्नी को खींच कर ले गया और पास के नींबू के पेड़ से बाँध दिया। फिर बिंदा ने उसे यात्रा के बारे में बताया। गांधी जी और उनके कुछ साथी गुजरात में पैदल चलते हुए, दांडी नाम की जगह पर समुद्र के पास पहुँचेंगे। गाँवों और शहरों से होते हुए पूरा महीना चलेंगे। दाँडी पहुँच कर वे नमक बनाएँगे।

"नमक?" धनी चौंक कर उठ बैठा, "नमक क्यों बनाएँगे? वह तो किसी भी दुकान से खरीदा जा सकता है।"

"हाँ, मुझे मालूम है।" बिंदा हँसा," पर महात्मा जी की एक योजना है। यह तो तुम्हें पता ही है कि वह किसी बात के विरोध में ही यात्रा करते हैं या जुलूस निकालते हैं, है न?"

"हाँ, बिल्कुल सही। मैं जानता हूँ। वे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ सत्याग्रह के जुलूस निकालते हैं जिससे कि उनके खिलाफ़ लड़ सकें और भारत स्वतंत्र हो जाए। पर नमक को लेकर विरोध क्यों कर रहे हैं? यह तो समझदारी वाली बात नहीं है।"

"बिल्कुल, धनी! क्या तुम्हें पता है कि हमें नमक पर 'कर' देना पड़ता है?"

© NCERT not to be republished

"अच्छा।" धनी हैरान रह गया।

"नमक की ज़रूरत सभी को है... इसका मतलब है कि हर भारतवासी, गरीब से गरीब भी, यह कर देता है," बिंदा चाचा ने आगे समझाया।

"लेकिन यह तो सरासर अन्याय है!" धनी की आँखों में गुस्सा था।

"हाँ, यह अन्याय है। इतना ही नहीं, भारतीय लोगों को नमक बनाने की मनाही है। महात्मा जी ने ब्रिटिश सरकार को कर हटाने को कहा पर उन्होंने यह बात ठुकरा दी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया है कि वे दांडी चल कर जाएँगे और समुद्र के पानी से नमक बनाएँगे।"

"एक महीने तक पैदल चलेंगे!" धनी सोच कर परेशान हो रहा था। "गांधी जी तो थक जाएँगे। वे दांडी बस या ट्रेन से क्यों नहीं जा सकते?"

"क्योंकि, यदि वे इस लंबी यात्रा पर दांडी तक पैदल जाएँगे तो यह खबर फैलेगी। अखबारों में फ़ोटो

छपेंगी, रेडियो पर रिपोर्ट जाएगी! और पूरी दुनिया के लोग यह जान जाएँगे कि हम अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं। और ब्रिटिश सरकार के लिए यह बड़ी शर्म की बात होगी।"

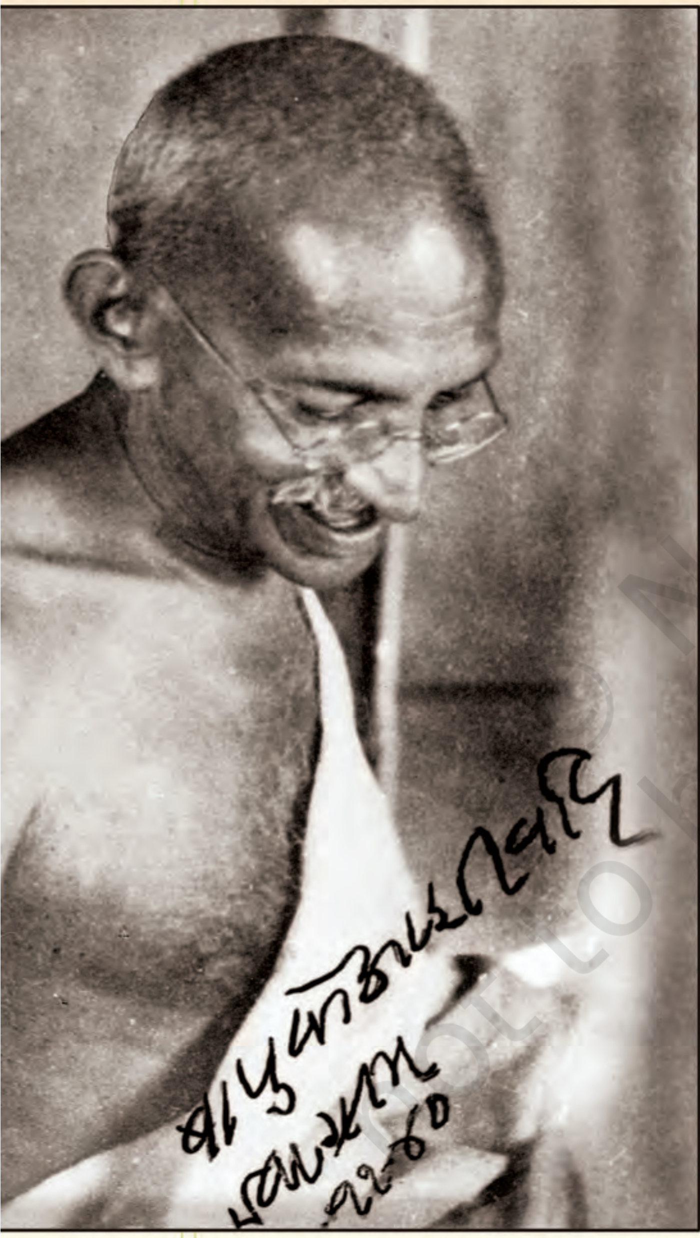

"गांधी जी, बड़े ही अक्लमंद हैं, हैं न?" धनी की आँखें चमकीं।

बिंदा ने हँसकर कहा, "हाँ, वह तो हैं ही।"

दोपहर को जब आश्रम में थोड़ी शांति छाई, धनी अपने पिता को ढूँढ़ने निकला। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर चरखा कात रहे थे।

"पिता जी, क्या आप और अम्मा दांडी यात्रा पर जा रहे हैं?" धनी ने सीधे काम की बात पूछी।

"मैं जा रहा हूँ। तुम और अम्मा यहीं रहोगे।"

"मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ।"

"बेकार की बात मत करो धनी! तुम इतना लंबा नहीं चल पाओगे। आश्रम के नौजवान ही जा रहे हैं।"

धनी ने हठ पकड़ ली, "मैं नौ साल का हूँ और आपसे तेज़ दौड़ सकता हूँ।"

© NCERT not to be republished

धनी के पिता ने चरखा रोक कर बड़े धीरज से समझाया, "सिर्फ़ वे लोग जाएँगे जिन्हें महात्मा जी ने खुद चुना है।"

"ठीक है! मैं उन्हीं से बात करूँगा। वह ज़रूर हाँ कहेंगे!" धनी खड़े होकर बोला और वहाँ से चल दिया।

गांधी जी बड़े व्यस्त रहते थे। उन्हें अकेले पकड़ पाना आसान नहीं था। पर धनी को वह समय मालूम था जब उन्हें बात सुनने का समय होगा–रोज़ सुबह, वह आश्रम में पैदल घूमते थे।

अगले दिन जैसे ही सूरज निकला, धनी बिस्तर छोड़कर गांधी जी को ढूँढ़ने निकला। वे गौशाला में गायों को देख रहे थे। फिर वह सब्ज़ी के बगीचे में मटर और बंदगोभी देखते हुए बिंदा से बात करने लगे। धनी और बिन्नी लगातार उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

अंत में, गांधी जी अपनी झोंपड़ी की ओर चले। बरामदे में चरखे के पास बैठ कर उन्होंने धनी को पुकारा, "यहाँ आओ, बेटा!"

धनी दौड़कर उनके पास पहुँचा। बिन्नी भी साथ में कूदती हुई आई।

"तुम्हारा क्या नाम है, बेटा?"

"धनी, बापू।"

"और यह तुम्हारी बकरी है?"

© NCERT not to be republished

"जी हाँ, यह मेरी दोस्त बिन्नी है, जिसका दूध आप रोज़ सुबह पीते हैं", धनी गर्व से मुस्कराया, "मैं इसकी देखभाल करता हूँ।"

"बहुत अच्छा!" गांधी जी ने हाथ हिलाकर कहा, "अब यह बताओ धनी कि तुम और बिन्नी सुबह से मेरे पीछे क्यों घूम रहे हो?"

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था", धनी थोड़ा घबराया। "क्या मैं आपके साथ दांडी चल सकता हूँ?" हिम्मत करके उसने कह डाला।

गांधी जी मुस्कुराए, "तुम अभी छोटे हो बेटा! दांडी तो बहुत दूर है! सिर्फ़ तुम्हारे पिता जैसे नौजवान ही मेरे साथ चल पाएँगे।"

"पर आप तो नौजवान नहीं हैं", धनी बोला, "आप नहीं थक जाएँगे?"

"मैं बहुत अच्छे से चलता हूँ", गांधी जी ने कहा।

"मैं भी बहुत अच्छे से चलता हूँ", धनी भी अड़ गया।

© NCERT not to be republished

“हाँ, ठीक बात है”, कुछ सोचकर गांधी जी बोले, “मगर एक समस्या है। अगर तुम मेरे साथ जाओगे तो बिन्नी को कौन देखेगा? इतना चलने के बाद, मैं तो कमज़ोर हो जाऊँगा। इसलिए, जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।”

“हूँ... यह बात तो ठीक है, बिन्नी तभी खाती है, जब मैं उसे खिलाता हूँ”, धनी ने प्यार से बिन्नी का सिर सहलाया, “और सिर्फ़ मैं जानता हूँ कि इसे क्या पसंद है।”

“बिल्कुल सही। तो क्या तुम आश्रम में रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?” गांधी जी प्यार से बोले।

“जी, हाँ, करूँगा”, धनी बोला, “बिन्नी और मैं आपका इंतज़ार करेंगे।”

सुभद्रा सेन गुप्ता
अनुवाद–मनीषा चौधरी

© NCERT not to be republished

प्यारे बापू

इस कहानी को पढ़कर तुम्हें बापू के बारे में कई बातें पता चली होंगी। उनमें से कोई तीन बातें यहाँ लिखो।

- ....

  ....

- ....

  ....

- ....

  ....

चूल्हा

धनी की माँ चूल्हा फूँक रही थीं।

धनी की माँ खाना पकाने के लिए चूल्हे का इस्तेमाल करती थीं। नीचे कुछ चित्र बने हैं। इनके नाम पता करो और लिखो।

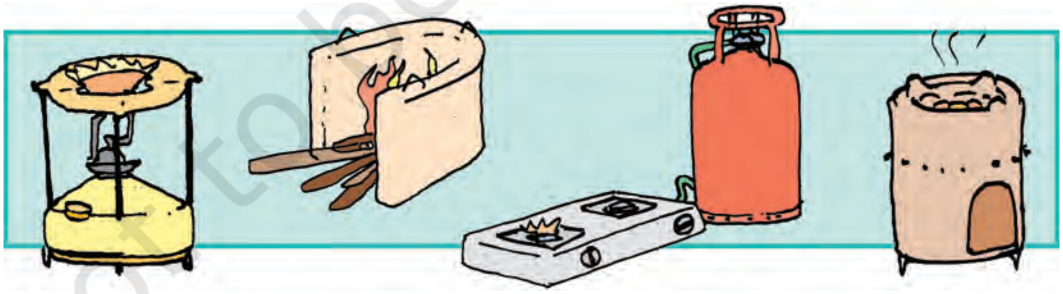

- इनमें कौन-कौन से ईंधन का इस्तेमाल किया जाता है?
- तुम्हारे घर में खाना पकाने के लिए इनमें से किसका इस्तेमाल किया जाता है?

© NCERT not to be republished

कहानी से आगे

नीचे कहानी में आए कुछ शब्द लिखे हैं। कक्षा में चार-चार के समूह में एक-एक चीज़ के बारे में पता करो–

- स्वतंत्रता
- सत्याग्रह
- खादी
- चरखा

तुम इस काम में अपने दोस्तों से, बड़ों से, शब्दकोश या पुस्तकालय से सहायता ले सकते हो। जानकारी इकट्ठा करने के बाद कक्षा में इसके बारे में बताओ।

आगे की कहानी

गांधी जी ने धनी से कहा, "क्या तुम आश्रम में ही रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?"

धनी ने गांधी जी की बात मान ली।

जब गांधी जी दांडी यात्रा से लौटे होंगे, तब आश्रम में क्या-क्या हुआ होगा? आगे की कहानी सोचकर लिखो।

कहानी से

(क) धनी ने गांधी जी से सुबह के समय बात करना क्यों ठीक समझा होगा?

(ख) धनी बिन्नी की देखभाल कैसे करता था?

(ग) धनी को यह कैसे महसूस हुआ होगा कि आश्रम में कोई योजना बनाई जा रही है?

© NCERT not to be republished

2024-25

कहानी और तुम

(क) धनी यात्रा पर जाने के लिए उत्सुक क्यों था?

- अगर तुम धनी की जगह होते तो क्या तुम यात्रा पर जाने की जिद करते? क्यों?

(ख) गांधी जी ने धनी को न जाने के लिए कैसे मनाया?

- क्या तुम गांधी जी के तर्क से सहमत हो? क्यों?

ताकत के लिए

गांधी जी ने कहा, "जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

बताओ, खूब सारी ताकत और अच्छी सेहत के लिए तुम क्या-क्या खाओगे-पिओगे?

चटपटी अंकुरित दाल	मीठा दूध
गर्म समोसे	रसीला आम
करारे गोलगप्पे	गर्मागर्म साग
कुरकुरी मक्का की रोटी	ठंडी आइसक्रीम
खुशबूदार दाल	रंग-बिरंगी टॉफ़ी
मसालेदार अचार	ठंडा शरबत

© NCERT not to be republished

विशेषता के शब्द

अभी तुमने जिन खाने-पीने की चीज़ों के नाम पढ़े, उनकी विशेषता बता रहे हैं ये शब्द—

चटपटी, मीठा, गर्म, ठंडा, कुरकुरी आदि

नीचे लिखी चीज़ों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो—

.... हलवा	.... पेड़	.... नमक	.... चीटी
.... पत्थर	.... कुरता	.... चश्मा	.... झंडा

चाँद की बिंदी

नीचे लिखे शब्दों में सही जगह पर ं या ँ लगाओ।

धुआ	कुआ	फूक	कहा
स्वतत्र	बाध	मा	गाव
बदगोभी	इतज़ार	पसद	

किसकी ज़िम्मेदारी?

धनी को बिन्नी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। इनकी क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ थीं?

- माँ
- पिता
- बिंदा

© NCERT not to be republished

ऐसे थे बापू

पोरबंदर, यहाँ गांधी जी का जन्म हुआ था

प्राथमिक विद्यालय, राजकोट जहाँ गांधी जी पढ़ते थे।

गांधी जी, 7 साल की आयु में

गांधी जी और कस्तूरबा सुबह सैर करते हुए

महात्मा गांधी प्रार्थना सभा में

महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर, शांतिनिकेतन में (पश्चिम बंगाल)

महात्मा गांधी काम करते हुए

महात्मा गांधी तुलसी का पौधा लगाते हुए

महात्मा गांधी लिखते हुए

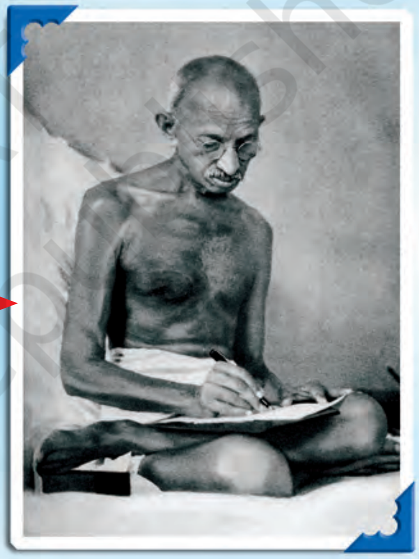

महात्मा गांधी पत्र पढ़ते हुए

10 थप्प रोटी थप्प दाल

0423CH10

(पर्दा खुलने पर बच्चे खेलते हुए दिखाई पड़ते हैं। सब बच्चे हल्ला मचाते, हँसते हुए बड़े उत्साह के साथ खेल रहे हैं। अचानक मुन्नी अपने घर से भागी-भागी वहाँ आती है और नीना को पुकारती है। नीना खेल छोड़कर सामने एक किनारे पर आ जाती है। पीछे बच्चों का खेल चलता रहता है।)

मुन्नी – (*पुकारकर*) ओ नीना, नीना सुन!

नीना – (*पास आते हुए*) क्यों, क्या बात है, मुन्नी?

मुन्नी – देख नीना, आज मैंने अम्मा से आटा, घी, दाल, दही, साग, चीनी, मक्खन सब चीज़ें ले ली हैं। चल, रोटी का खेल खेलेंगे।

नीना – हाँ, खूब मज़ा आएगा। चलो, उन लोगों को भी बुला लें। (*ताली बजाकर*)

अरे चुन्नू, सुनो, अब इस खेल को खेलते तो बहुत देर हो गई। चलो, अब रोटी का खेल खेलें।

सब – हाँ, हाँ! यह ठीक है।

मुन्नी – अच्छा-अच्छा चलो। देख चुन्नू, तू और टिंकू, बाज़ार से साग-सब्ज़ी लाने का काम करना।

नीना – नहीं, मुन्नी, इन दोनों से दाल बनवाएँगे। जब इनसे आग तक नहीं जलेगी, तब मज़ा आएगा।

चुन्नू – तो क्या तू समझती है हम आग नहीं जला सकते? चल रे टिंकू, आज इन्हें दाल बनाकर दिखा ही देंगे। क्यों?

टिंकू – हाँ, हाँ दोस्त। देख लेंगे।

मुन्नी – तो सरला, तू क्या करेगी?

सरला – भई, मैं तो दही का मट्ठा चला दूँगी।

मुन्नी – और तरला, तू।

तरला – मैं? मैं तेरे संग रोटी बनाऊँगी।

नीना – ठीक है, मैं बिल्ली बन जाती हूँ। खूब मज़ा आएगा! तुम्हारी सारी चीज़ें खा जाऊँगी।

(मट्ठा चलाने की हांडी लेकर अभिनय के साथ सरला और तरला रंगमंच पर आती हैं। फिर गगरी उतारने का और रई से मट्ठा चलाने का अभिनय करती हैं। एक बच्चा रोता हुआ माँ के पास आता है। वह उसे मक्खन देने का अभिनय करती है और

not to be republished © NCERT

प्यार से पास में बिठाकर फिर मट्ठा चलाने लगती है। मुन्नी दौड़कर आती है। मट्ठा देखने का अभिनय करती है।)

मुन्नी – वाह, खूब चलाया मट्ठा,
देखूँ यह मीठा या खट्टा।

सरला – क्या देखोगी!
इस मट्ठे का बढ़िया स्वाद,
खाकर सब करते हैं याद।
(चुन्नू, टिंकू कंधे पर बोझ रखे हुए आते हैं।)

तरला – यह लो, चुन्नू-टिंकू आए,
देखें क्या तरकारी लाए।

चुन्नू – (*बोझ उतारते हुए*) ओहो, पीठ रही है दुख।

टिंकू – मुझको लगी करारी भूख।

मुन्नी – (*मुँह मटकाते हुए*) बच्चूजी, भूख लगने से क्या होगा?
अब पहले तुम आग जलाओ,
और हांडी में दाल पकाओ।

चुन्नू – अरे हाँ।
चल जल्दी से दाल पकाएँ।
बड़ियों का भी स्वाद चखाएँ।

(दोनों आग जलाने, फूँक मारने और धुएँ की वजह से आए आँसू पोंछने का अभिनय करते हैं। फिर दाल और बड़ी पकाते हैं। कलछी से दाल चलाकर चखते हैं कि उँगली जल जाती है। उँगली जलने के अभिनय के साथ-साथ मुन्नी पास आकर इन्हें देखती है।)

© NCERT not to be republished

मुन्नी – टिंकू ने पकाई बड़ियाँ,
चुन्नू ने पकाई दाल,
टिंकू की बड़ियाँ जल गईं,
चुन्नू का बुरा हाल।

(तरला तथा अन्य सहेलियाँ एक ओर से आती हैं। हाथ कमर पर इस प्रकार रखा है जैसे हाथ में डलिया हो। आकर बैठ जाती हैं। फिर गाकर रोटी पकाने का अभिनय करती हैं।)

लड़कियाँ – थप्प रोटी थप्प दाल,
खाने वाले हो तैयार।

not to be republished © NCERT

(ये पंक्तियाँ दो बार गाई जाने के बाद चुन्नू और टिंकू के दोस्त एक पंक्ति में एक के पीछे एक कदम बढ़ाते हुए बड़ी शान के साथ आकर एक ओर बैठ जाते हैं। फिर लड़कियों की ओर हाथ फैलाकर माँगते हुए गाकर दो बार कहते हैं।)

चुन्नू – लाओ रोटी लाओ दाल,
लाओ खूब उड़ाएँ माल।

(मुन्नी और तरला की सहेलियाँ रोटी की डलिया उठाने का अभिनय करती हुई एक पंक्ति में लड़कों के पास आकर उन्हें रोटी देने के अंदाज़ में दो बार गाकर कहती हैं।)

मुन्नी आदि – ले लो रोटी ले लो दाल,
चखकर हमें बताओ हाल।

चुन्नू आदि – (चिढ़ाकर) खट्टा *(पर जैसे ही मुन्नी गुस्से से उनकी ओर देखती है तो कहते हैं)* नहीं, नहीं मीठा। खट्टा नहीं, नहीं, मीठा।

(खाने का अभिनय करते हुए) खट्टा, मीठा, खट्टा मीठा, खट्टा, मीठा, खट्टा, मीठा। *(कुछ रुककर)*

सब बच्चे – आधी खाएँ आधी रखें,
अब सो जाएँ, उठकर चखें।

(सब बच्चे सो जाते हैं। अचानक बिल्ली की म्याऊँ सुनाई पड़ती है। बिल्ली का प्रवेश। वह चारों ओर देखती है तो होंठों पर जीभ को फेरकर बड़ी खुश होकर कहती है।)

बिल्ली – ओहो! मक्खन कितना सारा,
झट से चटकर करूँ किनारा।

© NCERT not to be republished

(आगे बढ़ कर ऊपर उछलती है, छींके पर से कुछ चीज़ लेने का अभिनय करती है।)

है छींके पर यह क्या रखा,
आन रही क्या, अगर न चखा।

(हाथ बढ़ाकर रोटी निकालते हुए)

रोटी कैसी गरम-गरम है,
घी से चुपड़ी नरम-नरम है।
(खाते हुए)
मक्खन रोटी चावल दाल,
जी भर खाया कित्ता माल।
और देखो वह–
मुन्नी, चुन्नू, टिंकू सारे,
खर्राटे भर रहे बेचारे।
अब चुपके से सरपट जाऊँ।
आलसियों को सबक सिखाऊँ।
म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ।

(बिल्ली जाती है। अँगड़ाई लेकर सरला उठती है और मक्खन के बर्तन को खाली देखकर आश्चर्य से चिल्लाती हुई कहती है।)

सरला – ओ रे चुन्नू, टिंकू भाई,
कहाँ है मक्खन और मलाई?

© NCERT not to be republished

मुन्नी – *(चौंककर उठते हुए)*
अरे ज़रा छींके तक जाना,
और रोटी का पता लगाना।
हाय रे!
ना रोटी, ना दूध मलाई,
लगता है बिल्ली ने खाई।

एक बच्चा – बिल्ली आई आधी रात,
खा गई रोटी, खा गई भात।

दूसरा बच्चा – क्या कहा,
बिल्ली आई आधी रात,
खा गई रोटी, खा गई भात?

टिंकू – चलो बिल्ली की ढूँढ़ मचाएँ
फिर चोरी का मज़ा चखाएँ।

सब बच्चे – ठीक-ठीक।

(बच्चे मिलकर बिल्ली को ढूँढ़ने जाते हैं। कुछ बच्चे अंदर जाते हैं, बाहर आते हैं। कुछ रंगमंच पर सामने की ओर देखते हैं, कभी बैठकर नीचे झुककर देखते हैं। और नहीं मिलने का हाव-भाव प्रकट करते जाते हैं। तभी तरला-सरला चीखकर कहती हैं।)

तरला-सरला – यह लो,
मिल गई बिल्ली,
मिल गया चोर।

(बिल्ली घबराई हुई सी रंगमंच पर आ जाती है। सब उसे पकड़ते हैं।)

© NCERT not to be republished

सब – करो पिटाई इसकी ज़ोर।
(हँसकर मारने का अभिनय करते हुए)
बोल, अब खाएगी मेरी रोटी
अब खाएगी मेरी दाल?

बिल्ली – हाँ खाऊँगी सौ–सौ बार
जो सोओगे टाँग पसार।

(यह कहकर बिल्ली भागने का प्रयत्न करती है। पर सब बच्चे उसे घेर लेते हैं। तीन–चार बार ऐसा करने के बाद बिल्ली घेरा छोड़कर भाग जाती है, और सारे बच्चे 'पकड़ो पकड़ो' का शोर मचाते हुए उसके पीछे–पीछे भागते हैं।)

(पर्दा गिरता है।)

रेखा जैन

© NCERT not to be republished

कोई और शीर्षक

नाटक का नाम 'थप्प रोटी थप्प दाल' क्यों है?
तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे?

(क) ....

(ख) ....

आवाज़ वाले शब्द

थप्प रोटी <u>थप्प</u> दाल

'थप्प' शब्द से लगता है किसी तरह की आवाज़ है। आवाज़ का मज़ा देने वाले और भी बहुत से शब्द हैं, जैसे- टप, खट।
ऐसे ही कुछ शब्द तुम भी लिखो।

....

....

कौन-कौन से खेल

इस नाटक में बच्चे रोटी बनाने का खेल खेलते हैं। तुम अपने साथियों के साथ कौन-कौन से खेल खेलती हो, उनके नाम लिखो।

....

....

सोचकर बताओ

(क) नीना चुन्नू और टिंकू से ही दाल क्यों बनवाना चाहती होगी?
(ख) बच्चों ने खाने-पीने की चीज़ें छींके में क्यों रखीं?
(ग) चुन्नू ने दाल को पहले खट्टा फिर मीठा क्यों बताया?

© NCERT not to be republished

तुम्हारी बात

तुम्हारे घर में खाना कौन बनाता है? तुम खाना बनाने में क्या-क्या मदद करते हो? नीचे दी गई तालिका में लिखो।

खाना कौन बनाता है	मैं क्या मदद कर सकता हूँ	मैं क्या मदद करता हूँ
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

तुम क्या बनातीं

इन बच्चों की जगह तुम होतीं तो खाने के लिए कौन से तीन पकवान बनातीं? उन्हें बनाने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती? पता करो और सूची बनाओ।

पकवान का नाम	किन चीज़ों की ज़रूरत होगी

© NCERT not to be republished

मट्ठा बनाएँ

(क) *सरला ने कहा- मैं दही का मट्ठा चला दूँगी।*

दही का मट्ठा चलाने का मतलब है-

— दही बिलोना

— दही से लस्सी या छाछ बनाना

सरला को इस काम के लिए किन-किन चीज़ों की ज़रूरत होगी, उनके नाम लिखो।

(ख) बिलोना, घोलना, फेंटना

इन तीनों कामों में क्या फ़र्क है? बातचीत करो और पता लगाओ।

(ग) किन्हीं दो-दो चीज़ों के नाम बताओ जिन्हें बिलोते, घोलते और फेंटते हैं।

बिलोते हैं ....

घोलते हैं ....

फेंटते हैं ....

(घ) *सरला ने **रई** से मट्ठा बिलोया।*

रई को **मथनी** भी कहते हैं। रसोई के दूसरे बर्तनों को तुम्हारे घर की भाषा में क्या कहते हैं? कक्षा में इस पर बातचीत करो और एक सूची बनाओ।

© NCERT not to be republished

आओ तुकबंदी करें

नाटक में बच्चों ने अपनी बात को कई बार कविता की तरह कहा है जैसे—

टिंकू ने पकाई बड़ियाँ,
चुन्नू ने पकाई दाल
टिंकू की बड़ियाँ जल गईं,
चुन्नू का बुरा हाल

अब तुम भी नीचे लिखी पंक्तियों में कुछ जोड़ो –

घंटी बोली टन-टन-टन

....

कहाँ चले भई कहाँ चले

....

रेल चली भई रेल चली

....

कल की छुट्टी परसों इतवार

....

रोटी दाल पकाएँगे

....

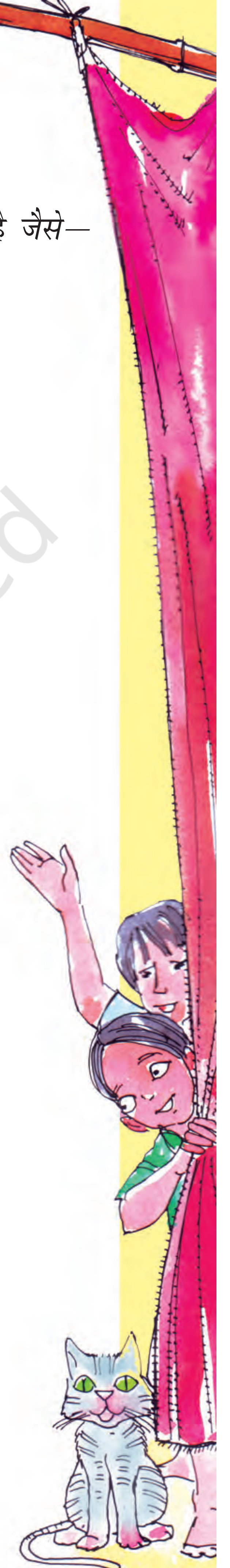

© NCERT not to be republished

11 पढ़क्कू की सूझ

एक पढ़क्कू बड़े तेज़ थे, तर्कशास्त्र पढ़ते थे,
जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे।

एक रोज़ वे पड़े फ़िक्र में समझ नहीं कुछ पाए,
"बैल घूमता है कोल्हू में कैसे बिना चलाए?"

कई दिनों तक रहे सोचते, मालिक बड़ा गज़ब है?
सिखा बैल को रक्खा इसने, निश्चय कोई ढब है।

आखिर, एक रोज़ मालिक से पूछा उसने ऐसे,
"अजी, बिना देखे, लेते तुम जान भेद यह कैसे?

कोल्हू का यह बैल तुम्हारा चलता या अड़ता है?
रहता है घूमता, खड़ा हो या पागुर करता है?"

मालिक ने यह कहा, "अजी, इसमें क्या बात बड़ी है?
नहीं देखते क्या, गर्दन में घंटी एक पड़ी है?

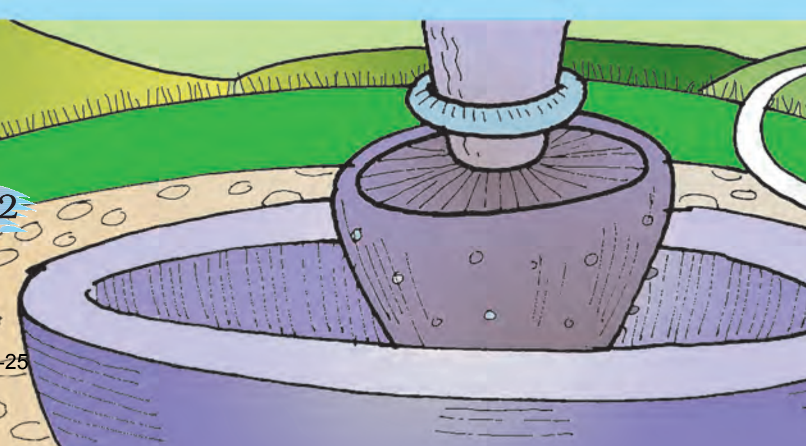

मंतिख-तर्कशास्त्र
पागुर-जुगाली

© NCERT not to be republished

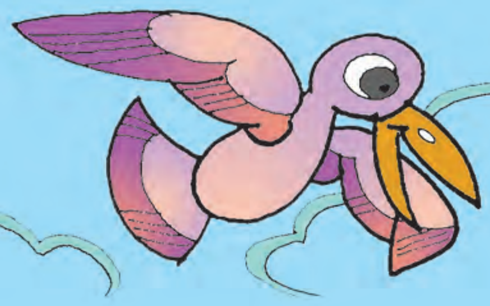

जब तक यह बजती रहती है, मैं न फ़िक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ।"

कहा पढ़क्कू ने सुनकर, "तुम रहे सदा के कोरे!
बेवकूफ! मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़े!

अगर किसी दिन बैल तुम्हारा सोच-समझ अड़ जाए,
चले नहीं, बस, खड़ा-खड़ा गर्दन को खूब हिलाए।

घंटी टुन-टुन खूब बजेगी, तुम न पास आओगे,
मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे?

मालिक थोड़ा हँसा और बोला कि पढ़क्कू जाओ,
सीखा है यह ज्ञान जहाँ पर, वहीं इसे फैलाओ।

यहाँ सभी कुछ ठीक-ठाक है, यह केवल माया है,
बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है।

रामधारी सिंह दिनकर

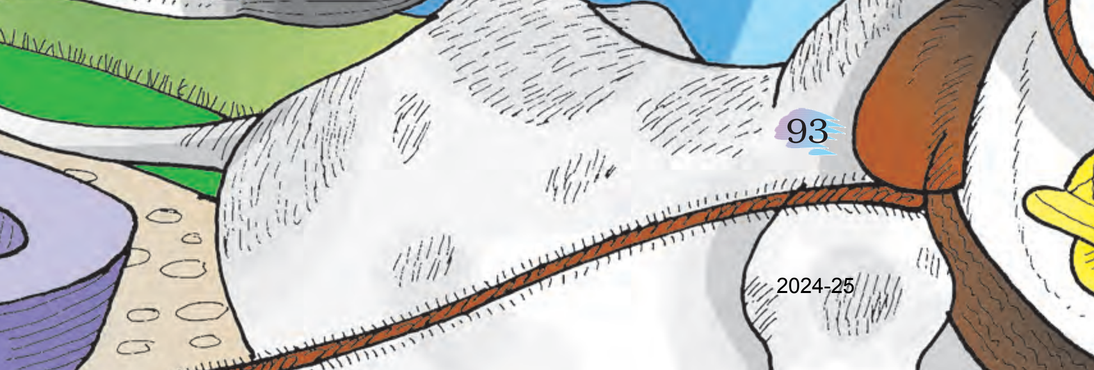

कविता में कहानी

'पढ़क्कू की सूझ' कविता में एक कहानी कही गई है। इस कहानी को तुम अपने शब्दों में लिखो।

कवि की कविताएँ

तीसरी कक्षा में तुमने रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'मिर्च का मज़ा' पढ़ी थी। अब तुमने उन्हीं की कविता 'पढ़क्कू की सूझ' पढ़ी।

(क) दोनों में से कौन-सी कविता पढ़कर तुम्हें ज़्यादा मज़ा आया? (चाहो तो तीसरी की किताब फिर से देख सकते हो।)

(ख) तुम्हें काबुली वाला ज़्यादा अच्छा लगा या पढ़क्कू? या कोई भी अच्छा नहीं लगा?

(ग) अपने साथियों के साथ मिलकर एक-एक कविता ढूँढ़ो। कविताएँ इकट्ठा करके कविता की एक किताब बनाओ।

मेहनत के मुहावरे

कोल्हू का बैल ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो कड़ी मेहनत करता है या जिससे कड़ी मेहनत करवाई जाती है।

मेहनत और कोशिश से जुड़े कुछ और मुहावरे नीचे लिखे हैं। इनका वाक्यों में इस्तेमाल करो।

- दिन-रात एक करना
- पसीना बहाना
- एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना

© NCERT not to be republished

पढ़क्कू

(क) पढ़क्कू का नाम पढ़क्कू क्यों पड़ा होगा?

(ख) तुम कौन-सा काम खूब मन से करना चाहते हो? उसके आधार पर अपने लिए भी पढ़क्कू जैसा कोई शब्द सोचो।

अपना तरीका

हाँ जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ

पूँछ धरता हूँ का मतलब है **पूँछ पकड़ लेता हूँ।**

नीचे लिखे वाक्यों को अपने शब्दों में लिखो।

(क) मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे?

(ख) बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है।

(ग) सिखा बैल को रखा इसने निश्चय कोई ढब है।

(घ) जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे।

गढ़ना

पढ़क्कू नई-नई बातें **गढ़ते** थे।

बताओ, ये लोग क्या **गढ़ते** हैं?

सुनार	....	कवि	....
लुहार	....	कुम्हार	....
ठठेरा	....	लेखक	....

© NCERT not to be republished

अर्थ खोजो

नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ अक्षरजाल में खोजो–

ढब, भेद, गज़ब, मंतिख, छल

त	र्क	शा	स्त्र	म्र
रा	ज	त	क	ब
जू	स	री	मा	धो
रा	ज़	का	ल	खा
धो	क	म	ल	ड़

© NCERT not to be republished

12 सुनीता की पहिया कुर्सी

0423CH12

सुनीता सुबह सात बजे सोकर उठी। कुछ देर तो वह अपने बिस्तर पर ही बैठी रही। वह सोच रही थी कि आज उसे क्या-क्या काम करने हैं। उसे याद आया कि आज तो बाज़ार जाना है। सोचते ही उसकी आँखों में चमक आ गई। सुनीता आज पहली बार अकेले बाज़ार जाने वाली थी।

उसने अपनी टाँगों को हाथ से पकड़ कर खींचा और उन्हें पलंग से नीचे की ओर लटकाया। फिर पलंग का सहारा लेती हुई अपनी पहिया कुर्सी तक बढ़ी। सुनीता चलने-फिरने के लिए पहिया कुर्सी की मदद लेती है। आज वह सभी काम फुर्ती से निपटाना चाहती थी। हालाँकि कपड़े बदलना, जूते पहनना आदि उसके लिए कठिन काम हैं। पर अपने रोज़ाना के काम करने के लिए उसने स्वयं ही कई तरीके ढूँढ़ निकाले हैं।

आठ बजे तक सुनीता नहा-धोकर तैयार हो गई।

2024-25

माँ ने मेज़ पर नाश्ता लगा दिया था।

"माँ, अचार की बोतल पकड़ाना", सुनीता ने कहा।

"अलमारी में रखी है। ले लो", माँ ने रसोईघर से जवाब दिया।

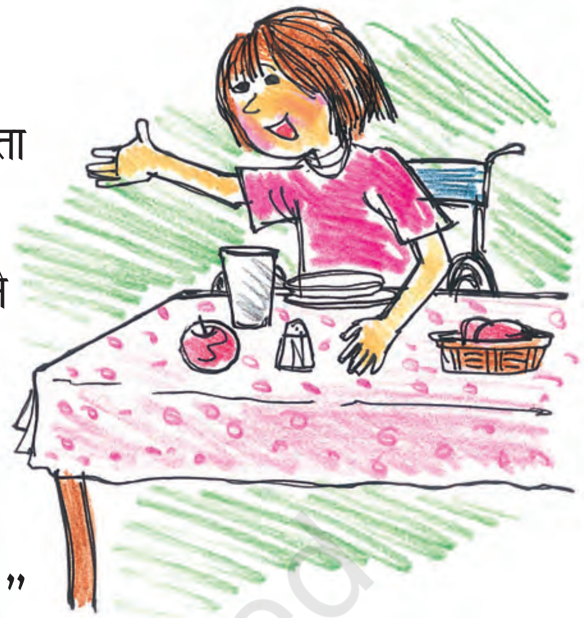

सुनीता खुद जाकर अचार ले आई। नाश्ता करते-करते उसने पूछा, "माँ, बाज़ार से क्या-क्या लाना है?"

"एक किलो चीनी लानी है। पर क्या तुम अकेले सँभाल लोगी?"

"पक्का", सुनीता ने मुस्कुराते हुए कहा।

सुनीता ने माँ से झोला और रुपए लिए। अपनी पहिया कुर्सी पर बैठकर वह बाज़ार की ओर चल दी।

सुनीता को सड़क की ज़िंदगी देखने में मज़ा आता है। चूँकि आज छुट्टी है इसलिए हर जगह बच्चे खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं। सुनीता थोड़ी देर रुक कर उन्हें रस्सी कूदते, गेंद खेलते देखती रही। वह थोड़ी उदास हो गई। वह भी उन बच्चों के साथ खेलना चाहती थी। खेल के मैदान में उसे एक लड़की दिखी, जिसकी माँ उसे वापिस लेने के लिए आई थी। दोनों एक-दूसरे को टुकुर-टुकुर देखने लगे।

© NCERT not to be republished

फिर सुनीता को एक लड़का दिखा। उस बच्चे को बहुत सारे बच्चे "छोटू–छोटू" बुलाकर चिढ़ा रहे थे। उस लड़के का कद बाकी बच्चों से बहुत छोटा था। सुनीता को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।

रास्ते में कई लोग सुनीता को देखकर मुस्कुराए, जबकि वह उन्हें जानती तक नहीं थी। पहले तो वह मन ही मन खुश हुई परंतु फिर सोचने लगी, "ये सब लोग मेरी तरफ़ भला इस तरह क्यों देख रहे हैं?"

खेल के मैदान वाली छोटी लड़की सुनीता को दोबारा कपड़ों की दुकान के सामने खड़ी मिली। उसकी माँ कुछ कपड़े देख रही थी।

"तुम्हारे पास यह अजीब सी चीज़ क्या है?" उस लड़की ने सुनीता से पूछा।

"यह तो बस एक...," सुनीता जवाब देने लगी परंतु उस लड़की की माँ ने गुस्से में आकर लड़की को सुनीता से दूर हटा दिया।

"इस तरह का सवाल नहीं पूछना चाहिए फ़रीदा! अच्छा नहीं लगता!" माँ ने कहा।

"मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ" सुनीता ने दुखी होकर कहा। उसे फ़रीदा की माँ का व्यवहार समझ में नहीं आया।

अंत में सुनीता बाज़ार पहुँच गई। दुकान में घुसने के लिए उसे सीढ़ियों पर चढ़ना था। उसके लिए यह कर पाना बहुत मुश्किल था। आसपास के सब लोग जल्दी में थे। किसी ने उसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

अचानक जिस लड़के को "छोटू" कहकर चिढ़ाया जा रहा था वह उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"मैं अमित हूँ," उसने अपना परिचय दिया, "क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ?"

"मेरा नाम सुनीता है," सुनीता ने राहत की साँस ली और मुस्कुराकर बोली, "पीछे के पैडिल को पैर से ज़रा दबाओगे?"

"हाँ, हाँ, ज़रूर" कहते हुए अमित ने पहिया–कुर्सी को टेढ़ा करके उसके अगले पहियों को पहली सीढ़ी पर रखा। फिर उसने पिछले पहियों को भी

© NCERT
be republished

2024-25

ऊपर चढ़ाया। सुनीता ने अमित को धन्यवाद दिया और कहा, "अब मैं दुकान तक खुद पहुँच सकती हूँ।"

दुकान में पहुँचकर सुनीता ने एक किलो चीनी माँगी। दुकानदार उसे देखकर मुस्कुराया। चीनी की थैली पकड़ने के लिए उसने हाथ आगे बढ़ाया ही था कि दुकानदार ने थैली उसकी गोदी में रख दी। सुनीता ने गुस्से से कहा, "मैं भी दूसरों की तरह खुद अपने आप सामान ले सकती हूँ।"

उसे दुकानदार का व्यवहार बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। चीनी लेकर सुनीता और अमित बाहर निकले।

"लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि मैं कोई अजीबोगरीब लड़की हूँ।" सुनीता ने कहा।

"शायद तुम्हारी पहिया कुर्सी के कारण ही वे ऐसा व्यवहार करते हैं।" अमित ने कहा।

"पर इस कुर्सी में भला ऐसी क्या खास बात है, मैं तो बचपन से ही इस पर बैठकर इसे चलाती हूँ", सुनीता ने कहा।

अमित ने पूछा, "पर तुम इस पर क्यों बैठती हो?"

"मैं पैरों से चल ही नहीं सकती। इस पहिया कुर्सी के पहियों को घुमाकर ही मैं चल-फिर पाती हूँ लेकिन फिर भी मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ। मैं वे सारे काम कर सकती हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं" सुनीता ने कहा।

अमित ने अपना सिर ना में हिलाया और कहा, "मैं भी वे सारे काम कर सकता हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं। पर मैं भी दूसरे बच्चों से अलग हूँ। इसी तरह तुम भी अलग हो।"

© NCERT not to be republished

सुनीता ने कहा, “नहीं! हम दोनों दूसरे बच्चों जैसे ही हैं।”

अमित ने दोबारा अपना सिर ना में हिलाया और कहा, “देखो तुम पहिया कुर्सी पर बैठकर चलती हो। मेरा कद बहुत छोटा है। हम दोनों ही बाकी लोगों से कुछ अलग हैं।”

सुनीता कुछ सोचने लगी। उसने अपनी पहिया कुर्सी आगे की ओर खिसकाई। अमित भी उसके साथ-साथ चलने लगा।

सड़क पार करते समय सुनीता को फ़रीदा फिर नज़र आई। इस बार फ़रीदा ने कोई सवाल नहीं पूछा। अमित झट से सुनीता की पहिया कुर्सी के पीछे चढ़ गया। फिर दोनों पहिया-कुर्सी पर सवार होकर तेज़ी से सड़क पर आगे बढ़े। फ़रीदा भी उनके साथ-साथ दौड़ी। इस बार भी लोगों ने उन्हें घूरा परंतु अब सुनीता को उनकी परवाह नहीं थी।

not to be republished © NCERT

कहानी से

- सुनीता को सब लोग गौर से क्यों देख रहे थे?
- सुनीता को दुकानदार का व्यवहार क्यों बुरा लगा?

मज़ेदार

सुनीता को सड़क की ज़िंदगी देखने में मज़ा आता है।

(क) तुम्हारे विचार से सुनीता को सड़क देखना अच्छा क्यों लगता होगा?

(ख) अपने घर के आसपास की सड़क को ध्यान से देखो और बताओ–

- तुम्हें क्या-क्या चीज़ें नज़र आती हैं?
- लोग क्या-क्या करते हुए नज़र आते हैं?

मनाही

फ़रीदा की माँ ने कहा, "इस तरह के सवाल नहीं पूछने चाहिए।"

फ़रीदा पहिया कुर्सी के बारे में जानना चाहती थी पर उसकी माँ ने उसे रोक दिया।

- माँ ने फ़रीदा को क्यों रोक दिया होगा?
- क्या फ़रीदा को पहिया कुर्सी के बारे में नहीं पूछना चाहिए था? तुम्हें क्या लगता है?
- क्या तुम्हें भी कोई काम करने या कोई बात कहने से मना किया जाता है? कौन मना करता है? कब मना करता है?

मैं भी कुछ कर सकती हूँ ...

(क) यदि सुनीता तुम्हारी पाठशाला में आए तो उसे किन-किन कामों में परेशानी आएगी?

(ख) उसे यह परेशानी न हो इसके लिए अपनी पाठशाला में क्या तुम कुछ बदलाव सुझा सकती हो?

© NCERT not to be republished

प्यारी सुनीता

सुनीता के बारे में पढ़कर तुम्हारे मन में कई सवाल और बातें आ रही होंगी। वे बातें सुनीता को चिट्ठी लिखकर बताओ।

....

....

....

प्रिय सुनीता,

....

....

....

....

....

तुम्हारी..........................

....

....

© NCERT not to be republished

कहानी से आगे

सुनीता ने कहा, "मैं पैरों से चल ही नहीं सकती।"

(क) सुनीता अपने पैरों से चल-फिर नहीं सकती। तुमने पिछले साल पर्यावरण अध्ययन की किताब **आस-पास** में रवि भैया के बारे में पढ़ा होगा। रवि भैया देख नहीं सकते फिर भी वे किताबें पढ़ लेते हैं।

- वे किस तरह की किताबें पढ़ सकते हैं?
- उस तरह की किताबों के बारे में सबसे पहले किसने सोचा?

(क) **आस-पास** में कुछ ऐसे लोगों के बारे में भी बात की गई है जो सुन-बोल नहीं सकते हैं।

- क्या तुम ऐसे किसी बच्चे को जानते हो जो सुन-बोल नहीं सकता?
- तुम उसे किस तरह से अपनी बात समझाते हो?

मेरा आविष्कार

सुनीता जैसे कई बच्चे हैं। इनमें से कुछ देख नहीं सकते तो कुछ बोल या सुन नहीं सकते। कुछ बच्चों के हाथों में परेशानी है, तो कुछ चल नहीं सकते।

तुम ऐसे ही किसी एक बच्चे के बारे में सोचो। यदि तुम्हें कोई शारीरिक परेशानी है, तो अपनी चुनौतियों के बारे में भी सोचो। उस चुनौती का सामना करने के लिए तुम क्या आविष्कार करना चाहोगे? उसके बारे में सोचकर बताओ कि

- तुम वह कैसे बनाओगे?
- उसे बनाने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत होगी?
- वह चीज़ क्या-क्या काम कर सकेगी?
- उस चीज़ का चित्र भी बनाओ।

© NCERT not to be republished

0423CH13

13 हुदहुद

हुदहुद को कलगी कैसे मिली

एक बार सुलेमान नाम के बादशाह आकाश में उड़ने वाले अपने उड़नखटोले पर बैठे कहीं जा रहे थे। बड़ी गर्मी थी। धूप से वह परेशान हो रहे थे। आकाश में उड़ने वाले गिद्धों से उन्होंने कहा कि अपने पंखों से तुम लोग मेरे सिर पर छाया कर दो। पर गिद्धों ने ऐसा करने से मना कर दिया। उन्होंने बहाना बनाते हुए कहा, "हम तो इतने छोटे-छोटे हैं। हमारी गर्दन पर पंख भी नहीं हैं। हम छाया कैसे कर सकते हैं!"

सुलेमान आगे बढ़ गए। कुछ दूर जाने पर उनकी भेंट हुदहुदों के मुखिया से हुई। सुलेमान ने उससे भी मदद माँगी। वह चतुर था। उसने फ़ौरन अपने दल के सभी हुदहुदों को इकट्ठा करके बादशाह सुलेमान के ऊपर छाया कर दी। सुलेमान बोले, "मैंने गिद्धों से भी मदद माँगी थी। वे मेरी मदद कर सकते थे पर उन्होंने मेरी मदद नहीं की। तुम गिद्धों से छोटे तो हो पर चतुर अधिक हो। तुम सबने मिलकर मेरी सहायता की है। मैं

© NCERT not to be republished

तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हारी कोई इच्छा पूरी करूँगा। बताओ, तुम्हारी क्या इच्छा है?"

मुखिया ने कहा, "महाराज, मैं अपने सभी साथियों से सलाह करने के बाद अपनी इच्छा बताऊँगा।"

मुखिया ने साथियों से सलाह करने के बाद कहा, "महाराज! यह वरदान दीजिए कि हमारे सिर पर आज से सोने की कलगी निकल आए।"

बादशाह हँसे और बोले–"मुखिया, इसका फल क्या होगा, यह तुमने सोच लिया है?"

मुखिया बोला "हाँ, महाराज! मैंने खूब परामर्श करके यह वर माँगा है।"

सुलेमान ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। सभी हुदहुदों के सिर पर सोने की कलगी निकल आई। लोगों ने सोने की कलगी को देखा, तो वे हुदहुदों के पीछे पड़ गए। तीर से उन्हें मार-मारकर सोना इकट्ठा करने लगे।

हुदहुदों का वंश समाप्त होने पर आ गया। तब मुखिया घबराकर बादशाह सुलेमान के पास पहुँचा और बोला "इस सोने की कलगी के कारण तो हमारा वंश ही समाप्त हो जाएगा।"

सुलेमान ने कहा "मैंने तो शुरू में ही तुम्हें चेतावनी दी थी। खैर, जाओ, आज से तुम्हारे सिर का ताज सोने का नहीं, सुंदर परों का हुआ करेगा।" और तभी से हुदहुदों के सिर पर परों का यह ताज (कलगी) शोभा पा रहा है।

© NCERT not to be republished

हुदहुद एक बहुत ही सुंदर पक्षी है। क्या तुम्हें पता है, इसके शरीर का सुंदर भाग कौन–सा है? इसके सिर की कलगी बहुत सुंदर है। वैसे तो यह इसे समेटे रहता है। पर जैसे ही किसी तरह की आवाज़ होती है, यह चौकन्ना होकर परों को फैला लेता है। तब यह कलगी देखने में हू–ब–हू किसी सुंदर पंखी जैसी लगने लगती है। इसी कलगी के बारे में तुमने अभी एक सुंदर कहानी भी पढ़ी है।

हुदहुद का सारा शरीर रंग–बिरंगा और चटकीला होता है। एक पक्षी और इतने सारे रंग! पंख काले–काले होते हैं जिन पर मोटी सफ़ेद धारियाँ बनी होती हैं। गर्दन का अगला हिस्सा बादामी रंग का होता है। चोटी भी बादामी रंग की होती है, मगर उसके सिरे काले और सफ़ेद होते हैं। दुम का भीतरी हिस्सा सफ़ेद और बाहरी हिस्सा काले रंग का होता है। चोंच पतली, लंबी तथा तीखी होती है। इस चोंच से यह आसानी से ज़मीन के भीतर छिपे हुए कीड़े मकोड़ों को ढूँढ़ निकालता है। इसकी चोंच नाखून काटने वाली 'नहरनी' से बहुत मिलती है और शायद इसीलिए कहीं–कहीं इसे 'हजामिन' चिड़िया के नाम से भी पुकारते हैं।

हुदहुद हमारे देश के सभी भागों में पाए जाते हैं।

© NCERT
not to be republished

तुमने इसे अपने घर के आसपास अपनी तीखी चोंच से ज़मीन खोदते हुए अवश्य देखा होगा। बोलते समय यह तीन बार 'हुप-हुप-हुप' सा कुछ कहता है, इसीलिए इसे अंग्रेज़ी में 'हूप ऊ' कहा जाता है। हिंदी में इसे हुदहुद कहते हैं। दूब में कीड़ा ढूँढ़ने के कारण हमारे देश में कहीं-कहीं इसे 'पदुबया' भी कहते हैं और सुंदर कलगी की वजह से कुछ देशों में लोग इसे 'शाह सुलेमान' कहकर पुकारते हैं।

मादा हुदहुद तीन से दस तक अंडे देती है। जब तक बच्चे अंडे से बाहर नहीं निकल जाते, वह अंडों पर बैठी रहती है, हटती नहीं। नर वहीं भोजन लाकर उसे खिला जाता है। पर दोनों में से कोई भी घोंसले की सफ़ाई नहीं करता।

संसार के विख्यात पक्षियों में से एक है यह हुदहुद। यह अपनी सुंदरता के लिए तो मशहूर है, पर इसे पालतू नहीं बनाया जा सकता और न ही इसकी बोली में मिठास है।

© NCERT not to be republished

तुम्हारी समझ

(क) हुदहुद को कहीं 'हजामिन' चिड़िया और कहीं 'पदुबया' के नाम से पुकारते हैं। क्यों?

(ख) हुदहुद की चोंच पतली, लंबी और तीखी होती है। इस बात को ध्यान में रखकर बताओ–

- वे कैसा भोजन खाते होंगे?
- चोंच से वे क्या-क्या काम ले सकते होंगे?

मैंने जाना

पाठ में से ऐसे शब्दों की सूची बनाओ जो पक्षियों के लिए इस्तेमाल होते हैं।

जानती थी	पढ़कर मालूम हुआ	जानना चाहती हूँ	कैसे/कहाँ से पता लगाऊँगी?

पाठ पढ़ने के बाद अपनी कॉपी में एक तालिका तैयार करो और उस तालिका में मालूम की गई जानकारी लिखो।

© NCERT not to be republished

पहचानें कैसे?

(क) अगर तुम्हें हुदहुद को पहचानने में किसी की मदद करनी है तो तुम उसे कौन-सी बातें बताओगे? चार-पाँच वाक्यों में लिखो।

(ख) अब कौवे या कबूतर को पहचानने के लिए चार-पाँच बिंदु लिखो। यह लिखने के लिए तुम्हें इन पक्षियों को कुछ समय तक बहुत गौर से देखना होगा।

तरह-तरह के नाम

तुम्हारे आसपास कौन-कौन से पक्षी पाए जाते हैं, उनके नामों की सूची बनाओ। तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के घर की भाषा में इन्हें क्या कहते हैं? जिन पक्षियों के नाम तुम्हें पता नहीं है, उनके नाम तुम्हें पता करने होंगे।

बातचीत

तुमने हुदहुद से जुड़ी एक कहानी पढ़ी है। उस कहानी को बातचीत के रूप में लिखो। नीचे हमने इस बातचीत को तुम्हारे लिए शुरू कर दिया है-

शाह सुलेमान - अरे भाई गिद्ध! ज़रा मेरी बात तो सुनो।

गिद्ध (उड़ते-उड़ते) - कहिए, मगर ज़रा जल्दी से।

शाह सुलेमान - ....

गिद्ध - ....

तुम अपने दोस्तों के साथ बातचीत को कक्षा में नाटक के रूप में प्रस्तुत कर सकते हो।

© NCERT not to be republished

रंगा-रंग

(क) *हुदहुद का सारा शरीर रंग-बिरंगा और चटकीला होता है।*

हुदहुद का रंग चटकीला बताया गया है। रंग कैसे हैं– यह बताने के लिए कुछ शब्दों का इस्तेमाल किया जा सकता है। जैसे, **फीके** रंग, **चटकीले** रंग आदि।

बताओ कि ऐसे रंग किन-किन चीज़ों के होते हैं।

रंग का नाम	इस रंग की चीज़ों के नाम
गहरा................	....
फीका................	....
भड़कीला............	....
सुनहरा..............	....

(ख) *यूनी ने* ***आसमानी*** *रंग की कमीज़ पहनी है।*

'आसमानी' रंग का नाम कैसे बना होगा? सोचो।

ऐसे ही कुछ और रंगों के नाम लिखो जो किसी चीज़ के नाम पर पड़े हैं।

....

....

....

....

(संकेत- फल, सब्ज़ी, पत्तों आदि के नामों पर)

© NCERT not to be republished

शब्द एक-अर्थ अनेक

- शाह की **भेंट** हुदहुदों के मुखिया से हुई।
- मुझे मेरी बहन ने एक बहुत सुंदर **भेंट** दी।

ऊपर वाले वाक्य में भेंट का मतलब **मुलाकात** से है, नीचे वाले वाक्य में **उपहार** से। तुम भी कोई ऐसे चार शब्द सोचो जिनके दो मतलब निकलते हों। उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

(क) ....

....

(ख) ....

....

(ग) ....

....

(घ) ....

....

नाम

हुदहुद *एक बहुत ही सुंदर* ***पक्षी*** *है।*

हुदहुद और पक्षी, दोनों को ही हम **संज्ञा** कहते हैं।

अब नीचे दी गई तालिका को आगे बढ़ाओ।

हुदहुद	*पक्षी*
भारत	*देश*
अनार	*फल*
....	....
....	....

© NCERT not to be republished

0423CH14

14 मुफ़्त ही मुफ़्त

एक दिन भीखूभाई का मन नारियल खाने का हुआ। ताज़ा-मुलायम, कसा हुआ, शक्कर के साथ। मम्म्म! उसके बारे में सोचते ही भीखूभाई ने अपने होठों को चटकारा, "वाह क्या मीठा-मीठा सा स्वाद होगा!"

लेकिन एक छोटी-सी समस्या थी। घर में तो एक भी नारियल नहीं था।

"ओहो! अब मुझे बाज़ार जाना पड़ेगा," उन्होंने अपनी पत्नी लाभुबेन से कहा।

लाभुबेन अपने कंधे उचकाकर बोलीं, "खाना है तो जाना है।"

एक समस्या और थी।

भीखूभाई ने कहा, "पैसे खर्च करने पड़ेंगे,"

लाभुबेन बोली, "हाँ। पैसे तो खर्च करने पड़ेंगे।"

अब तक तो तुम्हें पता लग गया होगा कि भीखूभाई ज़रा कंजूस थे। वे सीधे खेत में बूढ़े बरगद के नीचे जा कर बैठ गए और सोचने लगे, "क्या करूँ? मैं क्या करूँ?"

© NCERT not to be republished

मगर नारियल खाने के लिए जी ऐसा ललचाया कि वे जल्दी घर वापस लौटकर लाभुबेन से बोले, "अच्छा, मैं बाज़ार तक हो आता हूँ। पता तो चले कि नारियल आजकल कितने में बिक रहे हैं।"

जूते पहनकर, छड़ी उठाकर, भीखूभाई निकल पड़े।

बाज़ार में लोग अपने-अपने कामों में लगे थे। भीखूभाई ने इधर कुछ देखा, उधर कुछ उठाया और दाम पूछा। देखते-पूछते, वे नारियलवाले के पास पहुँच गए।

"ऐ नारियलवाले, नारियल कितने में दोगे?" भीखूभाई ने पूछा।

नारियलवाले ने कहा, "बस, दो रुपए में काका,"

"बस, दो रुपए!" भीखूभाई ने आँखें फैलाकर कहा, "बहुत ज़्यादा है। एक रुपए में दे दो।"

नारियलवाले ने कहा, "ना जी ना। दो रुपए, सही दाम। ले लो या छोड़ दो,"

"ठीक है! ठीक है!" भीखूभाई बड़बड़ाए। "अच्छा तो बताओ, एक रुपए में कहाँ मिलेगा?"

नारियलवाले ने कहा, "यहाँ से थोड़ी दूर जो मंडी है, वहाँ शायद मिल जाए।"

सो भीखूभाई उसी तरफ़ चल पड़े। "चलो देख लेते हैं," वे अपने आप से बोले, "टहलने

का एक मौका है और रुपए भर की बचत भी हो जाएगी।" खुशी से घुरघुराते भीखूभाई ने छड़ी को ज़मीन पर थपथपाया।

मंडी में कोलाहल फैला हुआ था। व्यापारियों की ऊँची-ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।

"बटाटा-आलू, बटाटा-आलू! कांदा-प्याज़ कांदा-प्याज़! गाजर गाजर गाजर! कोबी- बंदगोभी कोबी-बंदगोभी!"

माथे का पसीना पोंछकर भीखूभाई ने इधर-उधर ताका। नारियलवाले को देखकर पूछा, "अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?"

"सिर्फ़ एक रुपया, काका," नारियलवाले ने जवाब दिया, "जो चाहो ले जाओ। जल्दी।"

"शू छे भाई?" भीखूभाई ने कहा, "यह क्या? मैं इतनी दूर से आया हूँ और तुम पूरा एक रुपया माँग रहे हो। पचास पैसे काफ़ी हैं। मैं इस नारियल को लेता हूँ और तुम, यह लो, पकड़ो, पचास पैसे।"

नारियलवाले ने झट भीखूभाई के हाथ से नारियल को छीन लिया और बोला, "माफ़ करो, काका। एक रुपया या फिर कुछ नहीं।" लेकिन भीखूभाई का निराश चेहरा देखकर बोला, "बंदरगाह पर चले जाओ, हो सकता है वहाँ तुम्हें पचास पैसे में मिल जाए।"

शू छे-क्या है

भीखूभाई अपनी छड़ी से टेक लगाकर सोचने लगे, "आखिर पचास पैसे तो पूरे पचास पैसे हैं। वैसे भी मेरी टाँगों में अभी भी दम है।"

पैरों को घसीटते हुए, भीखूभाई चलने लगे। हर दो कदम पर रुककर, जेब में से बड़ा सफ़ेद रुमाल निकालकर, वे अपना पसीना पोंछते।

सागर के किनारे एक नाववाला बैठा था। उसके सामने दो-चार नारियल पड़े थे। "अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?" भीखूभाई ने पूछा और कहा, ''ये तो काफ़ी अच्छे दिखते हैं।''

"काका, यह कोई पूछने वाली बात है? केवल पचास पैसे" नाववाले ने कहा।

"पचास पैसे!" भीखूभाई मानो हैरानी से हक्के-बक्के हो गए। "इतनी दूर से पैदल आया हूँ। इतना थक गया हूँ और तुम कहते हो पचास पैसे? मेरी मेहनत बेकार हो गई। ना भाई ना! पचास पैसे बहुत ज़्यादा है। मैं तुम्हें पच्चीस पैसे दूँगा। यह लो, रख लो।'' ऐसा कहते हुए, भीखूभाई झुककर नारियल उठाने ही वाले थे...

नाववाले ने कहा, "नीचे रख दो। मेरे साथ कोई सौदा-वौदा नहीं चलेगा।"

थोड़ी देर बाद उसने भीखूभाई की ओर ध्यान से देखा और ज़रा ठंडे दिमाग से बोला, "सस्ते में चाहिए? नारियल के बगीचे में चले जाओ। वहाँ ढेर सारे मिल जाएँगे, मनपसंद दाम में।"

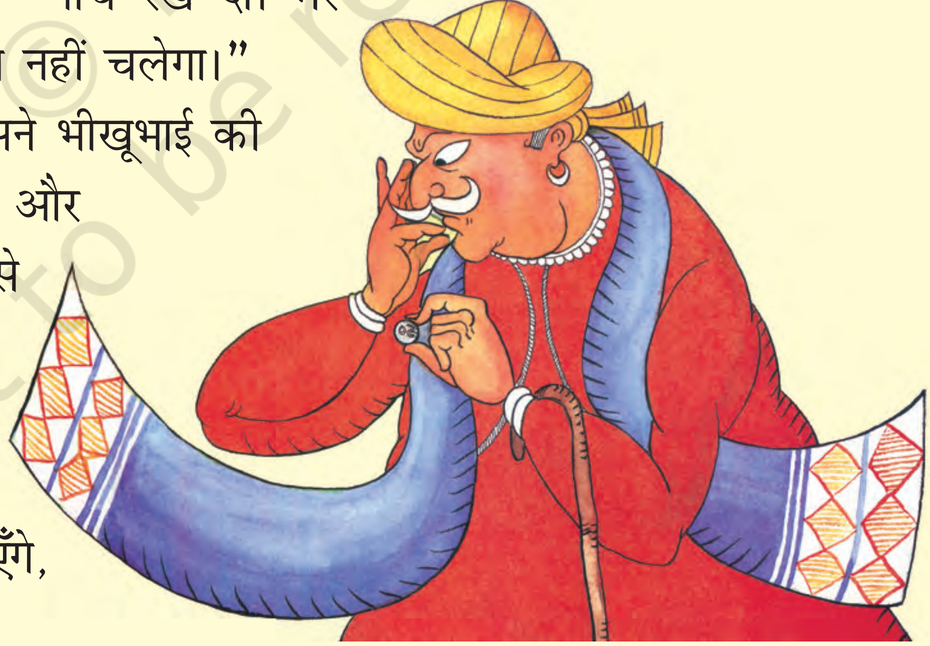

© NCERT not to be republished

भीखूभाई ने फिर अपने आप को समझाया, "इतनी दूर आया हूँ। अब बगीचे तक जाने में हर्ज़ ही क्या है?" सच बात तो यह थी कि वे काफ़ी थक चुके थे। मगर पच्चीस पैसे बचाने के ख्याल से ही उनमें फुर्ती आ गई।

भीखूभाई ने सोचा, "दोगुना ज़्यादा चलना पड़ेगा, पर चार आने बच भी तो जाएँगे और फिर, कोई भी चीज़ मुफ़्त में कहाँ मिलती है?"

भीखूभाई नारियल के बगीचे में पहुँच गए। वहाँ के माली को देखकर उससे पूछा, "यह नारियल कितने में बेचोगे?"

माली ने जवाब दिया, "जो पसंद आए ले जाओ, काका, बस, पच्चीस पैसे का एक। देखो, कितने बड़े-बड़े हैं!"

"हे भगवान! पच्चीस पैसे! पूरा रास्ता पैदल आने के बाद भी! जूते घिस गए, पैर थक गए और अब पैसे भी देने पड़ेंगे? मेरी बात मानो, एक नारियल मुफ़्त में ही दे दो, हाँ। देखो, मैं कितना थक गया हूँ !"

भीखूभाई की बात सुनकर माली ने कहा, "अरे, काका। मुफ़्त में चाहिए न? यह रहा पेड़ और वह रहा नारियल। पेड़ पर चढ़ जाओ और जितने चाहो तोड़ लो। वहाँ नारियल की कोई कमी नहीं है। पैसे तो मेरी मेहनत के हैं।"

"सच? जितना चाहूँ ले लूँ?" भीखूभाई तो खुशी से फूले न समाए। "मेरा यहाँ तक आना बेकार नहीं गया!"

उन्होंने जल्दी-जल्दी पेड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया।

पेड़ पर चढ़ते-चढ़ते भीखूभाई ने सोचा "बहुत अच्छे! मेरी तो किस्मत खुल गई। जितने नारियल चाहे तोड़ लूँ और पैसे भी न दूँ। क्या बात है!"

भीखूभाई ऊपर पहुँच गए। फिर वे टहनी और तने के बीच आराम से बैठ गए और दोनों हाथों को आगे बढ़ाने लगे सबसे बड़े नारियल को तोड़ने के लिए। ज़्ज़्ज़्क! पैर फिसल गए। भीखूभाई ने एकदम से नारियल को पकड़

लिया। उनके दोनों पैर हवा में झूलते रह गए।

"ओ माँ! अब मैं क्या करूँ?"

भीखूभाई चिल्लाने लगे, "अरे भाई! मदद करो!" उन्होंने नीचे खड़े माली से विनती की।

माली ने कहा, "वो मेरा काम नहीं, काका, मैंने सिर्फ़ नारियल लेने की बात की थी। बाकी सब तुम्हारे और तुम्हारे नारियल के बीच का मामला है। पैसे नहीं, खरीदना नहीं, बेचना नहीं, और मदद नहीं। सब कुछ मुफ़्त।"

तभी ऊँट पर सवार एक आदमी वहाँ से गुज़रा।

"अरे ओ!" भीखूभाई ज़ोर-ज़ोर से बुलाने लगे, "ओ ऊँटवाले! मेरे पैर वापस पेड़ पर टिका दो न! बड़ी मेहरबानी होगी।"

ऊँटवाले ने सोचा, "चलो, मदद कर देता हूँ। मेरा क्या जाता है।"

ऊँट की पीठ पर खड़े होकर उसने भीखूभाई के पैरों को पकड़ लिया। ठीक उसी समय ऊँट को हरे-हरे पत्ते नज़र आए। पत्ते खाने के लालच में ऊँट ने गर्दन झुकाई और अपनी जगह से हट गया।

बस, वह आदमी ऊँट की पीठ से फिसल गया! अपनी जान बचाने के लिए उसने भीखूभाई के पैरों को कसकर पकड़ लिया। अब दोनों क्या करते? इतने में एक घुड़सवार आया।

“अरे, सांभ्लो छो!” पेड़ से लटके दोनों पुकारने लगे। “सुनो भाई, कोई बचाओ! बचाओ! घुड़सवार को देखकर भीखूभाई ने दुहाई दी, “ओ मेरे भाई, मुझे पेड़ पर वापस पहुँचा दो।”

“हम्म्म। एक मिनट भी नहीं लगेगा। मैं घोड़े की पीठ पर चढ़कर इनकी मदद कर देता हूँ” यह सोचकर घुड़सवार घोड़े पर उठ खड़ा हुआ।

लेकिन कौन कहता है कि घोड़ा ऊँट से बेहतर है? हरी-हरी घास दिखाई देने पर तो दोनों एक जैसे ही हैं। घास के चक्कर में घोड़ा ज़रा आगे बढ़ा और छोड़ चला अपने मालिक को ऊँटवाले के पैरों से लटकते हुए।

एक, दो और अब तीनों के तीनों–झूलते रहे नारियल के पेड़ से।

“काका! काका! कसके पकड़े रहना, हाँ”, घुड़सवार ने पसीना-पसीना होते हुए कहा, “जब तक कोई बचाने वाला न आए, कहीं छोड़ न देना। मैं आपको सौ रुपए दूँगा।”

“काका! काका!” अब ऊँटवाले की बारी थी। “मैं आपको दो सौ रुपए दूँगा, लेकिन नारियल को छोड़ना नहीं।”

“सौ और दो सौ! बाप रे बाप, तीन सौ रुपए!” भीखूभाई का सिर चकरा गया। “इतना! इतना सारा पैसा!” खुशी से उन्होंने अपनी दोनों बाहों को फैलाया... और नारियल गया हाथ से छूट।

धड़ाम से तीनों ज़मीन पर गिरे–घुड़सवार, ऊँटवाला और भीखूभाई। भीखूभाई अपने आप को सँभाल ही रहे थे कि एक बहुत बड़ा नारियल उनके सिर पर आ फूटा।

बिल्कुल मुफ़्त।

ममता पण्ड्या

अनुवाद-संध्या राव

2024-25

तुम्हारी समझ

(क) हर बार भीखूभाई कम दाम देना चाहते थे। क्यों?

(ख) हर जगह नारियल के दाम में फ़र्क क्यों था?

(ग) क्या भीखूभाई को नारियल सच में मुफ़्त में ही मिला? क्यों?

(घ) *वे खेत में बूढ़े बरगद के नीचे बैठ गए।* तुम्हारे विचार से कहानी में बरगद को बूढ़ा क्यों कहा गया होगा?

भीखूभाई ऐसे थे

कहानी को पढ़कर तुम भीखूभाई के बारे में काफ़ी कुछ जान गए होगे। भीखूभाई के बारे में कुछ बातें बताओ।

(क) उन्हें खाने-पीने का शौक था।

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

क्या बढ़ा, क्या घटा

कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, कुछ चीज़ें बढ़ती हैं और कुछ घटती हैं। बताओ इनका क्या हुआ, ये घटे या बढ़े?

नारियल का दाम	....
भीखूभाई का लालच	....
रास्ते की लंबाई	....
भीखूभाई की थकान	....

© NCERT not to be republished

कहो कहानी

यदि इस कहानी में भीखूभाई को नारियल नहीं बल्कि आम खाने की इच्छा होती तो कहानी आगे कैसे बढ़ती? बताओ।

बात की बात

कहानी में नारियल वाले और भीखूभाई की बातचीत फिर से पढ़ो। अब इसे अपने घर की बोली में लिखो।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

शब्दों की बात

नाना–नानी *पतीली–पतीला*

ऊपर दिए गए उदाहरणों की मदद से नीचे दी गई जगह में सही शब्द लिखो।

काका	....	दर्ज़ी	....
मालिन	....	टोकरी	....
मटका	....	गद्दा	....

© NCERT not to be republished

मंडी

"मंडी में कोलाहल फैला हुआ था। व्यापारियों की ऊँची-ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।"

(क) मंडी में क्या-क्या बिक रहा होगा?

(ख) मंडी में तरह-तरह की आवाज़ें सुनाई देती हैं।
जैसे- ताज़ा टमाटर! बीस रुपया! बीस रुपया! बीस रुपया!
मंडी में और कैसी आवाज़ें सुनाई देती हैं?

(ग) क्या तुम अपने आसपास की ऐसी जगह सोच सकते हो, जहाँ बहुत शोर होता है। उस जगह के बारे में लिखो।

© NCERT not to be republished

गुजरात की झलक

(क) 'मुफ़्त ही मुफ़्त' गुजरात की लोककथा है। इस लोककथा के चित्रों में ऐसी कौन-सी बातें हैं जिनसे तुम यह अंदाज़ा लगा सकते हो?

(ख) गुजरात में किसी का आदर करने के लिए नाम के साथ भाई, बेन (बहन) जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। तेलुगु में नाम के आगे 'गारू' और हिंदी में 'जी' जोड़ा जाता है।

तुम्हारी कक्षा में भी अलग-अलग भाषा बोलने वाले बच्चे होंगे! पता करो और लिखो कि वे अपनी भाषा में किसी को आदर देने के लिए किन-किन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

© NCERT not to be republished

बजाओ खुद का बनाया बाजा

पिछली कक्षाओं में तुमने पत्तों से पटाखा बनाया, ग्रीटिंग कार्ड बनाया, कागज़ से मुखौटे बनाकर नाटक खेला। आओ, इस बार हम बाजे बनाएँ और तरह-तरह की आवाज़ों का मज़ा लें।

जलतरंग–पानी से भरे हुए प्यालों पर लकड़ी की पतली डंडी से चोट करने पर अलग-अलग तरह की आवाज़ें निकलती हैं जो सुनने में काफ़ी मधुर लगती हैं।

जलतरंग का मज़ा लेने के लिए चार या छह चीनी मिट्टी के अलग-अलग आकार के प्याले लो। अब उनमें पानी भरकर उन्हें एक क्रम में रखो। इन जल से भरे प्यालों पर लकड़ी की डंडी से चोट करो। सुनाई दी न मधुर-मधुर आवाज़ें। अब अंदाज़ा लगाओ कि इस बाजे का नाम जलतरंग क्यों पड़ा?

© NCERT not to be republished

नगाड़ा– नगाड़ा तो खूब बड़ा होता है। पर हम एक छोटा-सा नगाड़ा बनाएँगे।

इसके लिए नारियल का खोल, एक बड़ा गुब्बारा और धागा ले लो। अब नारियल के मुँह पर गुब्बारे खींचकर धागे से बाँध दो। लो बन गया नगाड़ा।

अब एक पतली लकड़ी के सिरे पर कपड़ा लपेटकर छोटी-सी घुंडी बनाओ। इस लकड़ी से बँधे हुए गुब्बारे पर चोट करो। क्या हुआ?

नारियल की जगह टीन का डिब्बा, मिट्टी का कुल्हड़ भी ले सकते हो। इसी तरह गुब्बारे की जगह पन्नी का इस्तेमाल कर सकते हो। चीज़ों के बदलाव से आवाज़ भी अलग-अलग तरह की निकलेगी।

धागे का बाजा– धागे से बाजा बनाने के लिए तुम पहले पतले धागे का एक टुकड़ा लो। इसके एक सिरे को अपने एक हाथ की उँगली में लपेटकर उसे अपने एक कान से सटाओ। फिर धागे के दूसरे सिरे को दूसरे हाथ की उँगली में लपेटकर हाथ की दूसरी उँगली से धागे को बजाओ। तुम्हारे ऐसा करने से अलग-अलग प्रकार की आवाज़ें बाहर आएँगी। अब तुम धागे की लंबाई कम या ज़्यादा करके आवाज़ों में बदलाव ला सकते हो।

आओ चलते-चलते आवाज़ों में बदलाव का एक और प्रयोग करें। कंघी को पतले कागज़ों में लपेटकर मुँह के पास लाओ। अब उसमें कुछ बोलो या गुनगुनाओ। देखो आवाज़ों में बदलाव स्पष्ट सुनाई पड़ेगा।

© NCERT not to be republished

आँधी

रात हुई तारीकी छाई, मीठी नींद सभी को आई।
मुन्नू सोया अप्पा सोई, अब्बा सोए अम्मी सोई।
आधी रात हुई जब सोते, खर खर खर खर्राटे भरते।
चुपके-चुपके आँधी आई, गर्द गुबार उड़ाती लाई।
चली हवाएँ सुर्र सुर्र सुर्र सुर्र, कागज़ उड़ गए फुर्र फुर्र फुर्र फुर्र।
खड़ खड़ खड़ खड़ पत्ते खड़के, डरने वालों के दिल धड़के।
बजने लगे किवाड़े खट खट, घर वाले सब जागे झटपट।
खटपट सुनकर मुन्नू जागा, उठकर झटपट अंदर भागा।
आँधी ने फिर ज़ोर दिखाया, फूस का छप्पर दूर गिराया।
टीन उड़ाई पेड़ गिराए, खपरे भी छत के सरकाए।
शाखें टूटीं तड़ तड़ तड़ तड़, बादल गरजे गड़ गड़ गड़ गड़।
बिजली चमकी चम चम चम चम, बूँदें टपकीं कम कम थम थम
लेकिन वह बूँदें थीं कैसी, पट पट पट पट ओले जैसी।

इस्माइल मेरठी

© NCERT not to be republished

तारीकी-अँधेरा